RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

डाक पंजीयन संख्या

एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन

पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 200

पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, गुरुवार, 09 नवम्बर, 2023

द अचीवर टाइम्स

एक नज़र

दिल्ली में पहली बार केजरीवाल सरकार कराएगी कृत्रिम बारिश, आईआईटी कानपुर ने सौंपा पूरा प्लान

दिल्ली। दिल्ली में वायु प्रदूषण के कारण हालत बिगड़ गए हैं। प्रदूषण से निपटने के लिए केजरीवाल सरकार दिल्ली में पहली बार कृत्रिम बारिश कराएगी। आईआईटी कानपुर की मदद से दिल्ली में कृत्रिम बारिश कराई जाएगी। जानकारी के अनुसार, 20 नवंबर के आसपास दिल्ली में कृत्रिम बारिश कराई जा सकती है। दिल्ली सरकार को आईआईटी कानपुर ने पूरा प्लान सौंपा है। मंगलवार को आईआईटी कानपुर की दिल्ली सरकार के मंत्रियों के साथ बड़ी बैठक हुई थी। शुक्रवार को दिल्ली सरकार सुप्रीम कोर्ट को जानकारी देगी। सुप्रीम कोर्ट से दिल्ली सरकार कृत्रिम बारिश कराने में केंद्र सरकार का सहयोग दिलाने की गुजारिश करेगी।

इंडिया गठबंधन में इसलिए पड़ी फूट, कई सहयोगी दल कांग्रेस से नाखुश!

नई दिल्ली। क्या 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी को घेरने के लिए बने ढ्ढ.ह्ल.ष्ठ.ढ्ढ.. गठबंधन में पड़ने लगी फूट? यह सवाल इसलिए उठ रहा है क्योंकि, अखिलेश यादव के बाद अब नीतीश कुमार भी कांग्रेस से नाराज बताए जा रहा हैं। देश में साल 2024 के लोकसभा चुनाव नजदीक हैं। इसमें बीजेपी को हराने के लिए विपक्षी दलों ने एकजुट होकर संघर्ष करने का ऐलान किया था। हालांकि, सेमीफाइल माने जा रहे पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में दलों के इंडिया गठबंधन में फूट पड़ गई है।

किशोरी का अपहरण, चार माह बाद भी सुराग नहीं

सलोन (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र में एक किशोरी का अपहरण कर लिया गया। बेटी की खोजबीन के लिए मां इधर-उधर भटकती रही। मामले में पुलिस ने केस दर्ज तक करना उचित नहीं समझा। कोर्ट के आदेश पर बुधवार को पुलिस ने किशोरी के अपहरण का केस दर्ज करके जांच शुरू कर दी है।

नीतीश के जनसंख्या बयान पर भड़के पीएम मोदी

कुछ तो शर्म करो देश की बेइज्जती करा रहे हो :पीएम मोदी

सूबे की आवाज़ डेस्क

दमोह/गुना/मुरैना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार विधानसभा में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के जनसंख्या नियंत्रण पर दिए बयान पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि इंडी अलायंस के जो नेता सरकार को उखाड़ने के लिए भांति-भांति के खेल खेल रहे हैं,वो विधानसभा में माता-बहनों की मौजूदगी में ऐसी भाषा में भद्दी बातें कर रहे हैं। कोई शर्म नहीं हैं इन्हें। कितना दर्भाग्य आया है, देश का... और कितना नीचे गिरेगे? दुनिया में देश की बेइज्जती करा रहे हो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को मध्य प्रदेश के दमोह, गुना और मुरैना में चुनावी सभाओं को संबोधित किया। उन्होंने गुना में नीतीश कुमार का नाम लिए बगैर ही उन पर निशाना साधा। दरअसल, नीतीश कुमार ने बिहार विधानसभा और विधान परिषद में जनसंख्या नियंत्रण को लेकर ऐसा तर्क दिया कि महिलाएं भी शर्मिंदा हो गईं। बवाल के बाद नीतीश ने माफी मांगी और अपने ही बयान की निंदा भी कर दी। इस पर मोदी ने तीखी टिप्पणी की। इस दौरान उन्होंने इंडी गठबंधन पर भी जोरदार हमले बोले।

पांडवों की राह पर चलने का है गर्व

मोदी ने दमोह में कहा कि 2014 से पहले किसी को कुछ पता नहीं चलता था कि देश के प्रधानमंत्री क्या कर रहे हैं, क्या बोल रहे हैं, क्योंकि उनका कोई काम ही नहीं था। वो सरकार रिमोट से चलती थी। कांग्रेस की रिमोट से चलने की आदत जा नहीं रही है। उस समय प्रधानमंत्री रिमोट से चलते थे, अब कांग्रेस अध्यक्ष रिमोट से चलते हैं। मैं कभी-कभी देखता हूं कि जब रिमोट की चार्जिंग खत्म हो गई हो, या कनेक्टिविटी टूट गई हो, तब हमारे कांग्रेस अध्यक्ष खुद के मूड में आ जाते हैं। उनके मुंह से कुछ अच्छी बातें निकल जाती हैं। मैंने कहीं पढ़ा कि वो पांडवों की बात कर रहे थे। जब रिमोट चालू रहता है, तब तो वो सनातन को गालियां देते हैं। रिमोट बंद हो गया तो पांडवों की बात करने लगे। उन्होंने कहा कि भाजपा में पांच पांडव हैं। जब वो सच बोलते हैं, तो कैसी बात मुंह से निकलती है। हमें गर्व है कि हम पांच पांडवों की राह पर चल रहे हैं।

जमानत पर बाहर आकर दे रहे हैं गालियां

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि 2014 में जब हमारी सरकार बनी तो सबसे पहले हमने कांग्रेस की भ्रष्ट मशीन के सारे टायर पंचर कर दिए। आधार, मोबाइल और बैंक खाते की ऐसी त्रिशक्ति बनाई कि कांग्रेस की भ्रष्ट मशीन टिक ही नहीं पाई। देशवासियों को वो तारीख आज भी याद है, जब नोटों के गद्दों पर सोने वालों की नींद उड़ गई थी। जब भी वो तारीख आती है, तो कांग्रेस ऐसे बिलबिलाती है, जैसे सबसे ज्यादा काली कमाई उसी को बैंक में पड़ी हो। भ्रष्टाचार पर कड़ी कार्रवाई करने के लिए कांग्रेस मुझे दिन में सौ-सौ बार गालियां देती है। ऐसे लोग जो हजारों करोड़ के घोटालों में जमानत पर हैं, उन्हें मोदी से तकलीफ होना स्वाभाविक है।

कांग्रेस से सावधान रहने की जरूरत

मोदी ने कहा कि केंद्र सरकार करोड़ों रुपये गरीबों के लिए मध्यप्रदेश भेज रही है। मजाल है कि कोई पंजा बीच में से पैसे लूटकर चला जाए। पैसा लोगों के बैंक खातों में आया और वह पंजा कुछ नहीं कर पाया। अगर प्रदेश में गलती से भी कांग्रेस की सरकार बन जाती है, तो हर काम में 85 प्रतिशत कमीशन तय है। यह उनके प्रधानमंत्री तय करके गए हैं। फिर न विकास होगा और न ही कोई काम होगा। कांग्रेस फिर से मध्य प्रदेश को बीमारू राज्य बना देगी। इसलिए आज की युवा पीढ़ी को कांग्रेस से बहुत सावधान रहने की जरूरत है।

कांग्रेस ने देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ किया

मुरैना में मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ किया है। आजादी के बाद देश का पहला घोटाला कांग्रेस ने सेना में ही किया। कांग्रेस ने देश को विदेशी हथियारों पर निर्भर रखा। आतंकी हमारे सैनिकों के सिर काटकर ले जाते थे और कांग्रेस सरकार बयान देकर छूट जाती थी। आज की सेना आतंकियों को उन्हीं की भाषा में घर में घुसकर जवाब देती है। भाजपा सरकार ने ही सैनिक स्कूलों में बेटियों के लिए दरवाजे खोले हैं। बेटियां भी सेनाओं में अफसर बन सकती हैं। अग्रिम मोर्चों पर तैनात हो सकती है। मोदी की एक और गारंटी है हर वंचित तक सुविधाएं सौंपने की। कांग्रेस कहती है कि देश के साधन-संसाधनों पर पहला अधिकार मुसलमानों का है। हमारे लिए गरीबों, वंचितों का हक पहला है। मोदी के लिए देश में गरीब ही सबसे बड़ी जाति है।

अमेरिका की इस्राइल को नसीहत

हमास और फलस्तीनी नागरिकों में करें अंतरः अमेरिका

एजेंसी

वाशिंगटन। हमास और इस्राइल युद्ध के बीच अमेरिका ने इस्राली सरकार को नसीहत दे डाली। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रधान उप प्रवक्ता वेदांत पटेल ने कहा, हमारी युद्ध पर करीब से नजर है। इस्राइली सरकार को हमास आतंकवादियों और फलस्तीनी नागरिकों पर अंतर करना होगा।

हमास और इस्राइल का युद्ध जारी है। हमास के हमले के बाद से ही इस्राइल आक्रमक दिखाई दे रहा है। इस्राइल की जवाबी कार्रवाई के बाद से ही गाजा में लगातार हमले किए जा रहे हैं। इसी बीच अमेरिका ने इस्राइली सरकार को नसीहत दे डाली। इस्राइली सरकार को अमेरिका ने कहा कि हमास के आतंकवादियों और फलस्तीनी नागरिकों के बीच अंतर करने को कहा है। अमेरिका ने कहा, हमने हमास के आतंकवादियों और फलस्तीनी नागरिकों के बीच अंतर करने की आवश्यकता के बारे में सीधे तौर पर इस्राइली सरकार के सामने मुद्दा उठाया है।

अमेरिकी विदेश विभाग के प्रधान उप प्रवक्ता वेदांत पटेल ने कहा, युद्ध पर हमारी करीब से नजर है। यह टिप्पणी अमेरिकी विदेश विभाग की साप्ताहिक प्रेस वार्ता के दौरान सामने आई। अमेरिका ने अपने रुख को स्पष्ट करते हुए कहा, वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि गाजा में सहायता के प्रवेश के साथ, हमास फिर से संगठित नहीं होगा और बंधकों को रिहा करने का मार्ग सुनिश्चित किया जाएगा। हम उन स्थितियों के बारे में बात कर रहे हैं, जो एक साथ सुनिश्चित करती हैं हमास ऐसी स्थिति में नहीं है कि वह फिर से संगठित हो सके। हम ऐसी स्थितियां बनाना चाहते हैं जो गाजा में अतिरिक्त मानवीय सहायता के प्रवेश की अनुमति दें। इस बीच इस्राइली विदेश मंत्रालय ने डेटा प्रकाशित किया और कहा कि गाजा पट्टी में हमास के आतंकवादियों ने एक महीने पहले यहूदी राज्य पर अपना बहुआयामी हमला शुरू करने के बाद से इस्राइली क्षेत्र पर 9,500 से अधिक रॉकेट दागे हैं। मध्य इस्राइल और गाजा की सीमा के पास के इलाकों में कई हवाई हमले वाले सायरन सक्रिय किए गए। बता दें आतंकवादी समूह ने कनाडा, ऑस्ट्रिया, ब्राजील, चीन, दक्षिण अफ्रीका, डेनमार्क, आयरलैंड, लिथुआनिया, मैक्सिको, नेपाल, नीदरलैंड, सर्बिया, यूक्रेन और उरुग्वे के व्यक्तिगत नागरिकों को बंधक बना रखा है। इस्राइल एयरपोर्ट अथॉरिटी ने मंगलवार को घोषणा की कि ÷ऑपरेशन स्वॉर्ड्स ऑफ आयरन÷ की शुरुआत के बाद से 330,000 से अधिक इस्राइली नागरिक विदेश से लौट आए हैं, जिससे यहूदी राज्य की आबादी लगभग 3.5 प्रतिशत बढ़ गई है।

हर गतिविधियों पर रहेगी पुलिस की नजर

लखनऊ। दीपावली को लेकर शहर के प्रमुख बाजारों में आईटीएमएस और निजी सीसीटीवी कैमरों की मदद से भी पुलिस निगरानी करेगी। पिंक बूथों पर तैनात महिला सिपाहियों का ड्यूटी टाइम भी बढ़ाया गया है। पुलिस व एलआईयू के साथ अग्निशमन अधिकारियों को अलर्ट किया गया है। जेसीपी (एलओ) उपेंद्र कुमार अग्रवाल ने बताया कि नो पार्किंग में खड़े वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। सभी डीसीपी को अपने-अपने इलाके के व्यापारियों के साथ बैठक कर दुकानों व शोरूम में लगे सीसीटीवी कैमरे चेक करने का आदेश दिया गया है। सार्वजनिक स्थानों पर पटाखों का अवैध भंडारण नहीं करने दिया जाएगा। उन्होंने लोगों से रात 10 बजे के बाद आतिशबाजी न करने की अपील की है। पुलिस कमिश्नर एसबी शिरडकर ने बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, शॉपिंग मॉल, बाजार व मेट्रो स्टेशनों के आसपास विशेष सतर्कता बरतने का आदेश दिया है। साथ ही दमकल कर्मियों और एलआईयू के लोगों को भी सतर्क रहने के लिए कहा है। थानेदारों को अवैध पटाखे की बिक्री पर अंकुश लगाने के लिए कहा गया है।

10 राज्यों में 55 जगहों पर एनआईए की छापेमारी

मानव तस्करी में शामिल 44 दलाल गिरफ्तार बड़ी मात्रा में कैश बरामद

एजेंसी

नई दिल्ली। छापेमारी के दौरान आधार कार्ड और पैन कार्ड सहित बड़ी संख्या में पहचान-संबंधी दस्तावेज भी बरामद किए गए हैं। जांच एजेंसी ने बताया कि इन दस्तावेजों के जाली होने का संदेह है। 10 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में चल रहे मानव तस्करी नेटवर्क के खिलाफ एनआईए ने बुधवार को बड़ी कार्रवाई की है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने इस बारे में जानकारी दी। एजेंसी ने बताया कि सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और राज्य पुलिस बलों के साथ मिलकर बुधवार सुबह भारत के कई राज्यों में एक व्यापक अभियान चलाया। इस दौरान मानव तस्करी के चार मामलों में 44 लोगों को गिरफ्तार किया गया।

एक साथ मारी रेड

एनआईए ने बताया कि मानव तस्करी को लेकर गुवाहाटी, चेन्नई, बैंगलोर, जयपुर में एनआईए शाखाओं में दर्ज चार मामलों को लेकर यह कार्रवाई की गई। इस

कार्रवाई के तहत आतंकवाद विरोधी एजेंसी ने त्रिपुरा, असम, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, तमिलनाडु,तेलंगाना, हरियाणा, राजस्थान, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर और पुडुचेरी में कुल 55 स्थानों पर एक साथ और रेड की।

भारतीय और विदेशी मुद्रा भी हुई बरामद

इस दौरान एनआईए ने मोबाइल फोन, सिम कार्ड और पेन ड्राइव जैसे डिजिटल उपकरण बरामद किए। इसके अलावा, आधार कार्ड और पैन कार्ड सहित बड़ी संख्या में पहचान-संबंधी दस्तावेज भी बरामद किए गए हैं। जांच एजेंसी ने बताया कि इन दस्तावेजों के जाली होने का संदेह है। इसके साथ ही 20 लाख रुपये मूल्य वाले भारतीय नोट और 4550 (3,78,819 रुपये) अमेरिकी डॉलर भी बरामद किए हैं।

44 लोगों की हुई गिरफ्तारी

इसके साथ ही छापेमारी के दौरान कुल 44 लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है। इनमें से 21 त्रिपुरा से, 10 कर्नाटक से, 5 असम से, 3 पश्चिम बंगाल से, 2 तमिलनाडु से और 1-1 पुडुचेरी, तेलंगाना और हरियाणा से गिरफ्तार किए गए हैं। जानकारी के मुताबिक, ये दलाल अवैध बांग्लादेशी और रोहिंग्याओं को देश के विभिन्न हिस्सों में भेजते थे।

डीजीपी विजय कुमार CBCID से हटे

12 घंटे में दो बार तैनाती में फेरबदल

एजेंसी

लखनऊ। राज्य सरकार ने बुधवार को डीजीपी विजय कुमार को सौंपी गयी जिम्मेदारियों में अहम बदलाव कर दिया। सुबह उनको डीजी सीबीसीआईडी के पद से हटा दिया गया।

राज्य सरकार ने बुधवार को डीजीपी विजय कुमार को सौंपी गयी जिम्मेदारियों में अहम बदलाव कर दिया। सुबह उनको डीजी सीबीसीआईडी के पद से हटा दिया गया। उनके स्थान पर डीजी एसआईबी (सहकारिता प्रकोष्ठ) आनंद कुमार को सीबीसीआईडी में तैनात किया गया है। वहीं दूसरी ओर यूपी 112 की महिला कर्मियों के आंदोलन के मामले की गाज एडीजी अशोक कुमार सिंह पर गिरी है। उनको हटाकर डीजीपी मुख्यालय से संबद्ध कर दिया गया है। एडीजी प्रशासन नीरा रावत को यूपी 112 का नया एडीजी बनाया गया है। बता दें कि विजय कुमार के पास अब तक डीजी सीबीसीआईडी का मूल पदभार था। इसके अलावा डीजी विजिलेंस और डीजीपी का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया था। बुधवार को सीबीसीआईडी से हटाए जाने के बाद उनको विजिलेंस का मूल पदभार सौंप दिया गया। वह डीजीपी का अतिरिक्त कार्यभार पूर्व की तरह संभालते रहेंगे। माना जा रहा है कि सीबीसीआईडी में लंबित जांचों की बढ़ती संख्या और हाल ही में गोंडा में दलित की मौत के मामले की विवेचना फर्जी तरीके से 14 बार बदलने की वजह से सीबीसीआईडी में किसी दूसरे अधिकारी को तैनात किया गया है। उल्लेखनीय है कि विजय कुमार आगामी 31 जनवरी को सेवानिवृत्त हो जाएंगे।

आचार संहिता के उल्लंघन केस में फिर कोर्ट नहीं पहुंचीं अभिनेत्री जयाप्रदा गिरफ्तारी वारंट जारी

एजेंसी

रामपुर। लोकसभा चुनाव के दौरान पूर्व सांसद जयाप्रदा के खिलाफ आचार संहिता उल्लंघन का केस दर्ज किया गया था। इस मामले में अभियोजन की गवाही पूरी हो चुकी है। पूर्व सांसद को अपने बयान दर्ज कराने हैं, लेकिन वह कोर्ट नहीं पहुंच रही हैं।

आचार संहिता के उल्लंघन के मामले में पूर्व सांसद जयाप्रदा फिर कोर्ट नहीं पहुंचीं। इसके बाद कोर्ट ने उनके खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए गैर जमानती वारंट जारी कर दिया। इस मामले की सुनवाई 17 नवंबर को होगी। स्वार कोतवाली में लोकसभा चुनाव के दौरान पूर्व सांसद जयाप्रदा के खिलाफ आचार संहिता के उल्लंघन के मामले में 2019 में मुकदमा कायम कराया गया था। यह मामला कोर्ट में विचाराधीन है। इस मामले में अभियोजन की गवाही पूरी हो चुकी है और पूर्व सांसद को अपने बयान दर्ज कराने हैं, लेकिन वह बयान दर्ज कराने कोर्ट नहीं पहुंच रही हैं। बुधवार को उन्हें कोर्ट में पेश होना था, लेकिन वह नहीं पहुंचीं। इस पर कोर्ट ने मामले की सुनवाई करते हुए पूर्व सांसद जयाप्रदा के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी करते हुए 17 नवंबर की तारीख निर्धारित की है।

कोर्ट पहले भी जारी कर चुकी गिरफ्तारी वारंट

पूर्व सांसद जयाप्रदा के खिलाफ कोर्ट पहले ही गिरफ्तारी वारंट कर चुका है। गिरफ्तारी वारंट जारी होने के बाद भी वह कोर्ट में हाजिर नहीं हो रही हैं। इस पर उनके खिलाफ लगातार वारंट जारी किया जा रहा है।

वकीलों ने नहीं किया न्यायिक कार्य

पश्चिम उत्तर प्रदेश में हाईकोर्ट की बेंच स्थापित किए जाने की मांग को लेकर वकीलों ने बुधवार को भी न्यायिक कार्य नहीं किया। बार एसोसिएशन के आह्वान पर बार से जुड़े वकीलों ने बुधवार को न्यायिक कार्य नहीं किया। जिसके चलते लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ा।

पंजाबी बाग की हवा सर्वाधिक प्रदूषित

पांच इलाकों में हालात खराब, 450 के पार रहा AQI

एजेंसी

नई दिल्ली। राजधानी में वायु प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में है। दूषित हवा में सांस लेना लोगों के लिए परेशानी बन रहा है। सुबह से ही स्मॉग की चादर छाई नजर आई। आंखों में जलन, सांस लेने में परेशानी हो रही है। बुधवार को अधिकतर इलाकों में हवा का स्तर रेड जोन में रहा। पंजाबी बाग इलाका सर्वाधिक प्रदूषित रहा। यहां वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 468 दर्ज किया गया। वहीं, पंजाबी बाग इलाकों समेत पांच इलाकों में हवा का स्तर 450 के पार दर्ज किया गया। वहीं, 27 इलाकों में हवा गंभीर श्रेणी और दिलशाद गार्डन समेत पांच इलाकों में हवा बेहद खराब श्रेणी में रही।

पंजाबी बाग में सबसे अधिक रहा एक्यूआई

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक दिल्ली में बुधवार को 27 इलाकों में एक्यूआई गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। इसमें पंजाबी बाग में 465, आईटीओ में 461, नेहरू नगर में 459, बवाना व रोहिणी में 456 व जहांगीरपुरी में

455 एक्यूआई दर्ज किया गया। साथ ही, मुंडका में 446, आनंद विहार में 449, एनएसआईटी द्वारका में 412, शादीपुर में 434, पटपड़गंज में 438, आईजीआई एयरपोर्ट में 441, डीटीयू में 421, बुराड़ी क्रॉसिंग में 422 समेत कई इलाकों में एक्यूआई गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया।

दिलशाद गार्डन में एक्यूआई सबसे कम दर्ज

दिलशाद गार्डन में बुधवार को वायु सूचकांक अन्य इलाकों के मुकाबले सबसे कम दर्ज किया गया। यहां एक्यूआई 317 दर्ज किया गया। वहीं, पांच इलाकों में हवा बेहद खराब रही। जिसमें श्री अरबिंदो मार्ग 392, लोधी रोड में 377, आरके पुरम में 376 व अलीपुर में 352 में एक्यूआई बेहद खराब श्रेणी में दर्ज किया गया।

ना जाने कितनी गई जाने लोक निर्माण आला अफसर बेखाबर

गड्ढा मुक्त सड़कों पर उठ रहे सवाल राहगीरों को पढ़ रही जान गवानी

जनसमस्या

तेज रफ्तार के कहर से गवानी पड़ी जान।

द अचीवर टाइम्स। रजनीश कुमार

मृतक का फाइल फोटो

इटौंजा लखनऊ। इटौंजा से कुर्सी मार्ग पर आए दिन एक्सीडेंट की दुर्घटनाएं बनी रहती हैं। जिसका मुख्य कारण सड़क पर गड्ढे ही गड्ढे नजर आते हैं और सड़क के दोनों और डिवाइड नजर नहीं आते जिससे आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं। आखिर सड़क लोक निर्माण अधिकारी की नींद कब टूटेगी इसका कोई अता पता नहीं है। बीते 1 सालों में कई दुर्घटनाएं हो चुके हैं। इस रोड पर इतना भयंकर एक्सीडेंट होता है कि राहगीर तुरंत अपना दम तोड़ देते हैं। इटौंजा से कुर्सी मार्ग महामाया डिग्री कॉलेज के पास नगर पंचायत महोना के काजी टोला निवासिनी शबाना उम्र लगभग 19 वर्ष जो की अपने रिश्तेदारों के साथ स्कूटी से देवा शरीफ बाबा के दर्शन के लिए जा रही थी कि अचानक गड्ढीनपुरवा के निकट उनका चप्पल गड्ढे में गिर गया जिसको उठाने के लिए शबाना गई थी। वहीं दूसरी ओर से 10 चक्का ट्रक अपनी तेज रफ्तार के कारण शबाना के ऊपर चढ़कर गया। जिससे वह बुरी तरह घायल हो गई। उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया जहां पर डॉक्टर ने उसकी मृत्यु घोषित कर दिया। चालक अर्जुन सिंह को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है और शव का पंचनामा कर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। एक जानकारी के अनुसार शबाना अपने माता-पिता की बहुत ही लाडली थी। पिताजी कबाडी का कार्य करते है और उनकी माता पैरालिसिस (पैरालाइज) की शिकार हैं जिनकी देखरेख उनकी पुत्री शबाना ही करती थी जोकी इस घटना से उनके माता पिता सदमे में आ गई हैं आखिर अब उनकी देखरेख कौन करेगा खुद ही जाने। इस दुर्घटना से पूरे मोहल्ले में सन्नाटा सा छा गया। आपको बताते चलें की पूर्व में उनाई देवी मंदिर के दर्शन के लिए श्रद्धालु ट्रैक्टर ट्राली से जा रहे थे और महामाया डिग्री कॉलेज गद्दीनपुरवा के निकट एक्सीडेंट हो गया था, जिसमें लगभग 10 महिलाएं वा बच्चों की मौत हो गई थी। जिसकी खबर सुनकर जिलाधिकारी लखनऊ, उप जिलाधिकारी बीकेटी, थाना इटौंजा माय फोर्स के साथ पहुंचे थे और लोक निर्माण के अधिकारियों को निर्देशित किया था की सड़क के दोनों और डिवाइड बनवाया जाए। परंतु उनके बयान बाजी धरी की धरी रह गई। यहां पर आए दिन सड़क दुर्घटनाएं होती हैं और लोक निर्माण के आला अफसर कान में उंगली डालें बैठे हैं। उनको दूसरों की जान की कोई परवाह नहीं है।

अज्ञात कारणों से की आत्महत्या घर में मचा कोहराम

द अचीवर टाइम्स निशांत शुक्ला

बिलग्राम(हरदोई)। कोतवाली प्रभारी डीडी सिद्धार्थ ने बताया है कि पुलिस को जानकारी मिली थी कि आज दिनांक 8/11/23 को दिन मे करीब 11 बजे मुकेश पुत्र विष्णु चंद्र उम्र 28 वर्ष निवासी ग्राम दुर्गागंज क्षेत्र थाना बिलग्राम जनपद हरदोई ने गांव पूर्व दिशा में जंगल में चांदी के पेड़ से लटक कर आत्महत्या कर ली है अपने घर से एक किलोमीटर दूरी पेड़ में अपने कपड़े से लगाकर आत्महत्या कर ली है पंचायत नामा की कारवाई कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।वहीं हादसे के बाद परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

सड़क हादसे में पिता-पुत्र की मौत अनियंत्रित डंपर के लोडर में मारी टक्कर

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। आज रफ्तार का कहर देखने को मिला हादसे में पिता-पुत्र की मौत हो गयी है। पुरवा कोतवाली अंतर्गत पुरवा-अचलगंज मार्ग स्थित भूलेमऊ पेट्रोल पंप के पास कानपुर जा रहे लोडर में अनियंत्रित डंपर ने सामने से टक्कर मार दी। जिससे चालक की मौके पर मौत हो गई। वहीं क्लीनर गंभीर रुपए से घायल हो गया। जिसे जिला अस्पताल उन्नाव में भर्ती कराया गया। जहां इलाज के दौरान उसने भी दम तोड़ दिया है। पुलिस ने जांच कर शव पोस्टमार्टम के लिये भेजा है। हादसे के बाद रोड पर बड़ा जाम लग गया काफी मसक्कत के बाद जाम को खुलवाया गया। घटना के बाद परिजन रो-रोकर बेहाल हैं आपको बता दें कि कानपुर के बर्रा निवासी कृष्ण कुमार पुत्र राम शंकर लोडर लेकर अपने पिता क्लीनर राम शंकर पुत्र सोनेलाल के साथ कानपुर से पुरवा जा रहा था। जैसे ही वह अचलगंज रोड पर भूलेमऊ पेट्रोल पंप के पास पहुंचे तभी सामने से आ रहे तेज रफ्तार डंपर ने लोडर में जोरदार टक्कर मार दी। जिससे लोडर क्षतिग्रस्त हो गया और चालक कृष्ण कुमार की मौके पर मौत हो गयी। वहीं दुर्घटना में क्लीनर राम शंकर गंभीर घायल हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही पुरवा कोतवाली पुलिस ने आनन - फानन घायल रामशंकर को एम्बोलेंस द्वारा उन्नाव जिला अस्पताल ले गये इलाज के दौरान रामशंकर की भी मृत्यु हो गई । पुलिस ने मृतक को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक के परिजनों को सूचना दी। मौत की सूचना मिलने पर परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। इसके बाद सड़क पर खड़े क्षतिग्रस्त वाहनों को किनारे कराया गया। इस दौरान पुरवा मार्ग पर जाम की स्थिति बनी रही। कोतवाली प्रभारी सुरेश सिंह ने बताया कि हादसे में दोनों की मौत हो गई है। जांच कर शव मोर्चरी भेज दिए गए हैं। आगे की कार्रवाई की जा रही है। उन्नाव पोस्टमार्टम हाउस में दोनों का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है परिजन भी मौके पर आ गए हैं परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई करने की बात कही है।

एक नज़र

उज्ज्वला योजना के अंतर्गत पात्र गरीब लाभार्थियों को मिले गैस कनेक्शन

द अचीवर टाइम्स निशांत शुक्ला

बिलग्राम हरदोई । भारत सरकार के महत्वपूर्ण उज्ज्वला योजना के अंतर्गत पात्र गरीब लाभार्थियों को गैस कनेक्शन देने के लिए बिलग्राम स्थित मां इंडियेन गैस सर्विस कार्यालय के बाहर कंपनी से आए अधिकारी व एजेंसी के मैनेजर द्वारा महिला लाभार्थियों को गैस के कनेक्शन सिलेंडर गैस चूल्हा रेगुलेटर आदि दिया गया वह इसके प्रयोग को लेकर विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई की गैस सिलेंडर लीकेज होने पर जो कैप है उसे लगाकर 1091 पर अथवा एजेंसी के नंबर पर जो की कनेक्शन पासबुक में दिया गया है उसकी सूचना देते ही कर्मचारी लीकेज की समस्या को दूर करने में मदद करेगा के साथी गैस को कब और कैसे ऑन करें मोबाइल से बात करते समय कभी भी गैस को ऑन न करें क्योंकि बात करते समय भूल बस कभी-कभी गैस खुली छूट जाती है जिससे खतरा हो सकता है इस प्रकार कंपनी द्वारा दिए गए सुझाव की एक बुकलेट भी लाभार्थियों को दी गई गैस कनेक्शन प्रकार सभी के चेहरो पर प्रसन्नता दिखाई दी उन्होंने प्रदेश व केंद्र सरकार द्वारा दीपावली के उत्सव पर गैस कनेक्शन मिलने पर खुशी जाहिर की।

नव विवाहिता ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

द अचीवर टाइम्स निशांत शुक्ला

बिलग्राम(हरदोई)। कोतवाली प्रभारी डीडी सिद्धार्थ ने बताया है कि पुलिस को जानकारी मिली थी कि आज दिनांक 8/11/23 अंजना प्रजापति पुत्री मुकेश चंद्र उम्र 20 वर्ष पत्नी रोहित निवासी ग्राम भोगैतापुर क्षेत्र थाना बिलग्राम जनपद हरदोई ने गांव में ही अपने घर के अन्दर कमरे में फासी लगाकर आत्महत्या कर ली सूचना के बाद मर्त्य के परिजन भी घटना इस्तल पर पहुंच गए जहां बेटी के शव को देख कर रोने बिलखने लगे उसके पश्चात पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्मार्टम हेतू जिला चिकित्सालय भेजा गया मर्त्या के परीजनो के द्वारा ससुराली जनो पर बेटि को प्रताड़ित कर मार डालाने का आरोप लगाया वहीं प्रभारी निरीक्षक धर्मदास सिथार्थ ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस मामले की गंभीरता से जाच मे लगी हैं दोसी व्यक्ति को सजा दिलाई जाएगी।

खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय हरपालपुर मौजूद शिक्षक

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हरदोई। हरपालपुर में शिक्षक/कर्मचारियों ने पुरानी पेंशन के पक्ष में अपना सहमति पत्र लाँक बाक्स में डालते हुए उत्तर प्रदेशीय जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ ब्लाक इस्तरीय कार्यकारिणी एवम एवम शिक्षिकाओं ने पुरानी पेंशन के पछ में अपनी सहमती देते हुए कहा की यह सहमती पत्र संग्रह पेटिका क्र क्र ष्ट में 21नवंबर तक रखी रहेगी जिसमे समस्त शिक्षक अपनी सहमती प्रदान करें इस अवसर पर सभी जनपदीय/मण्डलीय/ ब्लॉक कार्यकारिणी के पदाधिकारी जैसे अवधेश कुमार मिश्रा मण्डल लखनऊ वरिष्ठ उपाध्यक्ष अवधेश मिश्रा जिला लेखाकार सूर्य कांत पाठक ब्लाक अध्यक्ष महेंद्र पाल मंत्री बिनय मोहन शुक्ला कोषाध्यक्ष राम मनोहर मिश्रा अरेंद्र मिश्रा कुलदीप दुवेदी बिनोद गजेंद्र यादव रूपेश पटेल संजीव श्रीवास्तव सर्वेंद्र क्र क्र गिरीश पाल आदि लगभग 50 शिक्षक मौजूद रहे।

लखनऊ माल सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का हुआ आयोजन

द अचीवर टाइम्स नरेंद्र कुमार गौतम माल। माल विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत मंझी में श्रीमद् भागवत कथा एवं श्री रूद्र महायज्ञ 108 कलशों की स्थापना कर संपन्न हुई श्रीमद् भागवत कथा। वृंदावन धाम से पधारे हुए पं0 श्री गौरव कृष्ण पांडे जी के मुखारविंद से श्री कथा समस्त ग्राम वासियों व क्षेत्र वासियों श्रवण किया। दो नवम्बर से आठ नवम्बर तक भगवान भोलेनाथ श्री जंगलेश्वर महादेव मंदिर ग्राम मंझी में सम्पन्न हुई कथा एवं विशाल भंडारे में समस्त ग्राम वासी व क्षेत्र वासियों ने प्रसाद ग्रहण किया।

शिक्षामित्र की समस्याओं का जल्द होगा समाधान सुशील यादव

द अचीवर टाइम्स दीपक कनौजिया।

लखनऊ। उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षा मित्र संघ के प्रदेश अध्यक्ष शिवकुमार शुक्ला प्रदेश महामंत्री सुशील कुमार यादव प्रदेश कोषाध्यक्ष रमेश मिश्रा लखनऊ से हरिनाम सिंह ने प्रमुख सचिव बेसिक शिक्षा, बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह, निदेशक बेसिक शिक्षा डॉ महेंद्र देव एवं महानिदेशक विजय किरन आनंद से मुलाकात की और शिक्षामित्र की समस्याओं का समाधान करने का आग्रह किया इस पर प्रमुख सचिव महोदय ने जल्द ही प्रस्तावित कमेटी की बैठक में, शिक्षामित्र के स्थाईकरण मानदेय निर्धारण करने एवं मूल विद्यालय वापसी के बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की और आगामी कमेटी की बैठक में प्रस्ताव बनवाकर सरकार को भेजने का

ब्लाक सिकंदरपुर सरोसी की 55 ग्राम पंचायतों की बैठक में 95 क्षेत्र पंचायत सदस्यों ने की गौशालाओं गौवंसो को संरक्षित किए जाने पर चर्चा

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। सदर तहसील के ब्लॉक सरोसी में पी सी एस उत्तम कुमार तिवारी व ब्लॉक प्रमुख कुशला देवी अध्यक्षता में क्षेत्र पंचायत सदस्यों की बैठक की गयी जिसमें कुल 55 ग्राम पंचायतों 95 क्षेत्रपंचायत मौके पहुंचे जहां पर प्रधानमंत्री किसान सम्माननिधि के तहत ए बी पी एस व के वाई सी की समस्याओं के समाधान हेतू चर्चा की गयी पराली जलाये जाने पर रोक थाम व पराली दो खाद लो पर चर्चा की गयी नवीन गौशालाओं के निर्माण व गौवंशो को संरक्षित किये जाने पर चर्चा की गयी मनरेगा व स्वक्ष पेजल व दर्जनों योजनाओं के बारे में चर्चा हुई वही पर मौजूद क्षेत्र पंचायत सदस्यों के द्वारा अपनी अपनी ग्राम पंचायत समस्या को लेकर अवगत कराया जिसमें मुख्य रूप से ग्राम पंचायत बंदा खेड़ा क्षेत्र पंचायत शुभम सिंह व राहुल सिंह ने बताया कि बन्दा खेंडा में गोसंरक्षण न होने से किसान अपनी फसलों को लेकर परेशान रहते हैं रात दिन फसलों की रखवाली करने के वाबजूद भी फसल बचाना मुश्किल हो रहा फसल की रखवाली करते समय कई किसानों की जान भी जा चुकी है।

महिला का शव लोन नदी के किनारे पड़ा मिला

द अचीवर टाइम्स देवराज

लालगंज रायबरेली। थाना लालगंज के अंतर्गत ग्राम वासियोंद्वारा दी गईसूचना कि एक महिला का शव लोन नदी के किनारे पड़ा हुआ है सूचना मिलते ही आनन फानन प्रभारी निरीक्षक शिव शंकर सिंह व पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचकर महिला के शव की शिनाख्त के लिए आसपास के लोगों से पूछा गया तो महिला की पहचान बताशा पत्नी स्वर्गीय महावीर रविदास निवासी गुमान खेड़ा खीरो रायबरेली लगभग उम्र 70 वर्ष के करीब हुई परिजनों द्वारा बताया कि उपरोक्त महिला कल सुबह 10-00 बजे घर से निकली थी महिला का मानसिक संतुलन ठीक नहीं था परिजनों द्वारा सूचना दी गई थी शव को कब्जे में लेकर पंचायतनामा व पोस्टमार्टम की कार्रवाई हेतु भेज दिया गया

जिला अस्पताल उन्नाव के इमरजेंसी वार्ड में होती है अभद्रता

इमरजेंसी में मौजूद डॉक्टर आने वाले मरीजों से करते है बत्तमीजी से बात

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। पिछले दिनों कई ऐसी शिकायत आ रही है मरीजों द्वारा और उनके परिजनों द्वारा की जा रही है शिकायत और कहा जा रहा है की इमरजेंसी में मौजूद डॉक्टर करते हैं सभी मरीजों से अभद्र व्यवहार और इलाज करने की बजाय डांट कर भगाने का करते है प्रयास आज इसी क्रम में पीड़ित रमेश श्रीवास्तव अपनी बच्ची को लेकर जिला अस्पताल पहुंचे जहां उनकी बेटी को पहले तों भर्ती करने से मना कर दिया और वहां मौजूद स्टाफ नर्सों की टीम ने अभद्रता करते हुए उनकी बेटी की लाचारी पर हंसना शुरू कर दिया और कहां की अभी करवा रहे हो भर्ती थोड़ी देर में एक घंटा नही लगेगा बिना इलाज के रेफर कर देंगे कानपुर , इस घटना क्रम से आहत होकर रमेश ने कर्म क्रांति सेवा फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष चेतन मिश्रा को सूचित किया सूचना मिलते ही चेतन अपनी टीम के साथ जिला अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में पहुंचे जहां उन्होंने रमेश की बेटी को भर्ती करवाया वही एमरजेंसी वार्ड में बैठे डॉक्टर शोभित अग्निहोत्री से बात करनी चाही तो वह खुद सहम गए वहां का दृश्य देखकर जिन डॉक्टर्स को मरीज को भगवान मान कर इलाज करवाना चाहिए वहां डॉक्टर मरीजों के साथ अभद्रता से बात कर रहे थे जिसमे शोभित अग्निहोत्री का व्यवहार अत्यंत खराब और तानाशाही भरा था , चेतन कहते हैं की डॉक्टर शोभित से यह उनकी दूसरी मुलाकात है इससे पूर्व एक बार शोभित ने एक बुजुर्ग और एक रिक्शा चालक की बेटी को भर्ती करने और जबरन उसको डिस्चार्ज करने के लिए अभद्रता वाला रवैया अपनाया था , ऐसी कार्यशैली देखकर समाजसेवी चेतन मिश्रा बहुत आहत हुए उनके साथ मौजूद अन्य सदस्य भी डॉक्टर शोभित के इस रवैए से ना खुश दिखाई दिए यह घटनाक्रम मात्र रमेश की बेटी के साथ ही नही वहां आने वाले प्रत्येक मरीज के साथ साथ घटित हो रही थी इन सब प्रकरण और व्यवहार को देखकर समाजसेवी आहत हुए और उन्होंने जल्द ही जिला अधिकारी महोदया के सामने पीड़ितों के साथ लें जा कर पूरी घटना क्रम को बताने की बात भी कही ताकि भविष्य में इलाज करवाने के लिए आने जाने वाले ग्रामीणों को जरूरतमंदों को इस तरह की अभद्रता का सामना ना करना पड़े बता दें समाजसेवी चेतन मिश्रा जी की माता जी का पूर्व में एक्सीडेंट हो गया था जिसमे उनकी कमर की हड्डी टूट गई थी बावजूद समाजसेवी जनता के हित में निरंतर कार्य कर रहे हैं एक तरफ मां को भी संभाल रहे हैं और दूसरी तरफ मदद मांगने वाली जनता को भी ऐसे समाजसेवियों का यदि हृदय आहत होता है तो यह दुर्भाग्य की बात है।

जब बुजुर्ग महिला के हाथ में अर्जी, देख रुक गए ज़िलाधिकारी, सुनीं समस्या

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी। जिलाधिकारी सत्येन्द्र कुमार कलेक्ट्रेट स्थित अपने कार्यालय में रोज की भांति जनता की समस्याओं की सुनवाई कर रहे थे। जन सुनवाई समाप्त होने के बाद जिलाधिकारी जब अपनी गाड़ी में बैठ कर जाने लगे, उसी समय एक बुजुर्ग महिला, रानी देवी पत्नी बुधसागर निवासी ग्राम सदरापुर परगना व तहसील फतेहपुर अपनी समस्या लेकर जिलाधिकारी को देख उनकी ओर बढ़ीं। जिलाधिकारी ने महिला के हाथ में अर्जी देख, अपनी कार रूकवाई और उनसे समस्या पूछी। फिर कार से उतर कर उनकी पूरी बात सुनी। बुजुर्ग महिला, रानी देवी ने बताया कि इसके पहले भी कई बार प्रार्थना पत्र दिया लेकिन विपक्षीजन दबाव बनाकर जमीन पर कब्जा कर रहे हैं। जिलाधिकारी ने बुजुर्ग महिला की पूरी बात सुनी और आश्वासन दिया कि तत्काल सघन जांच कराकर सम्बन्धित अधिकारी शीघ्र कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे।

श्रीकृष्ण व सुदामा मिलन झांकी देख भक्तों की आंखें हुई नम

द अचीवर टाइमस – महेन्द्र कुमार

हसनगंज उन्नाव। हसनगंज तहसील क्षेत्र के गांव मौलाबांकीपुर मंदिर प्रांगण में उमाशंकर द्विवेदी द्वारा श्रीमद् भागवत कथा का किया गया आयोजन। भागवत कथा के सातवें दिन कथा वाचक के द्वारा बताया गया एक मित्र के प्रति एक मित्र का प्रेम कैसा होना चाहिए कथा वाचक के मुखार बिन्दु से निकली वाणी ने भक्तों का मन मोह लिया मानो प्रेम व मिलन की ललक झलक रही थी भागवत प्रेमियों की आंखों में एक अद्भुत आदर्श रूप के दर्शन हो रहे थे।भागवत कथा प्रेमियों को झांकी के माध्यम से लगा जैसे वह साक्षात सुदामा सखा द्वारिकाधीश उनके बीच आ गए हो। बताते चलें एक सच्चे मित्र की पहचान बुरे समय में होती है दिलों में यदि प्रेम मित्र के प्रति सच्ची लगन है तो वह दिख ही जाती है वही दृश्य जब सुदामा अपने बचपन के मित्र श्री कृष्ण से मिलने पहुंचे द्वारपालों ने गरीबी बदहाली के चलते उनका मजाक उड़ाया लेकिन जैसे ही दूसरी तरफ बचपन के सखा सुदामा का हाल श्री कृष्ण ने सुन पाया कृपानिधान नंगे पांव दौड़ पड़े झठ मित्र सुदामा को गले लगा लिया श्रीकृष्ण सुदामा मिलन कथा सुन भगवत प्रेमियों की आंखें भर आई भाव विभोर होकर कथा सुनकर क्षेत्रवासी हुए आनन्दित इस प्रकार क्षेत्र में श्रीमद्भागवत कथा बनी चर्चा का विषय।

इन्सेंटिव – शास्त्री उमाशंकर द्विवेदी ने क्षेत्र वासियों से अपनी कथा समापन पर निवेदन किया दीपावली पर्व निकट रहा है लोगों से मैं निवेदन करता हूं कि आप लोग शराब पीकर वाहन न चलाएं अधिकतर मदिरा पीकर वाहन चलाने से होती हैं दुर्घटनाएं। खुद बच्चे दूसरों को भी बचाए नशा मुक्त भारत बनाएं।

आज पुष्पा देवी बिद्रा प्रसाद इण्टर के नाम से संचालित माता पुष्पा जी के दशम संस्कर का आयोजन किया गया

द अचीवर टाइम्स अभिषेक राजपूत

हरदोई । उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के सटे हरदोई जनपद के अतरौली थाना क्षेत्र अंतर्गत पुष्पा देवी बिद्रा प्रसाद इण्टर के नाम से संचालित माता पुष्पा जी के दशम संस्कर का आयोजन किया गया था जिसमे सण्डीला विधायिका माननीय अलका सिंह अर्कवशी व लाखन आर्मी चीफ सुरज पासी व भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजू गुप्ता मौजुदव सभी पत्रकार बन्धु पुष्पा देवी बिंद्रा प्रसाद इंटर कॉलेज के प्रबंधक बिंद्रा प्रसाद, संचालक सतीश , कड़ीले प्रसाद , श्यामू , अनुज कुमार ब्लॉक अध्यक्ष भारती किसान यूनियन लोकतांत्रिक व इंद्रेश कुमार शैलेंद्र , अनूप , सुरेंद्र, संदीप, अनुज लोग मौजूद रहे।

एसजीपीजीआई के रेडियोलॉजी विभाग में इंटरनेशनल रेडियोलॉजी डे मनाया गया

द अचीवर टाइम्स रघुनाथ सिंह

लखनऊ। इस अवसर पर विभाग में एक क्विज प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। रेडियोलॉजी की विभागाध्यक्ष डॉ अर्चना गुप्ता ने चिकित्सा जगत में रेडियोग्राफर की भूमिका के बारे में बताया और रेडियोलोजी में नए नए शोध एवं तकनीक पर प्रकाश डाला एवं आर्टिफीसियल इंटेलीजेंसी के बारे में इस कार्य क्रम के दौरान अपने संबोधन से अवगत कराया। विभागाध्यक्ष प्रो. अर्चना गुप्ता द्वारा विजताओ को पुरुस्कार भी प्रदान किए गए। वरिष्ठ प्राविधिक अधिकारी श्री व्यास मुनि को सम्मानित किया गया एवं हॉर्टिकल्चर विभाग में स्टीविया का पौधा विल्हेम कोनराड रॉन्टजन की याद में पौधा रोपण भी किया गया। इस कार्य क्रम के दौरान मौजूद रहे पी जी आई के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी सरोज वर्मा, देवाशीष चक्रवर्ती , निरंजन नामहाता, अभय कुमार झा तथा सभी ने अपने अपने विचार भी रखे।स्नातक कर रहे विद्यार्थियों के लिए एक क्विज का आयोजन भी किया गया। डॉ अर्चना गुप्ता ने इस उपलक्ष्य पर वृक्षा रोपण भी किया।

प्रदेश सरकार दिव्यांग बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने तथा उनके चतुर्दिक विकास के लिए प्रयासरत : सतीश चन्द्र शर्मा

❖राज्यमंत्री सतीश चन्द्र शर्मा तथा जिला पंचायत अध्यक्षा श्रीमती राजरानी रावत ने 175 विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को बांटे उपकरण ।

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी । राज्यमंत्री सतीश चंद्र शर्मा ने कहा कि प्रदेश सरकार विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को सशक्त बनाने का काम कर रही है। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से दिव्यांग बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने तथा उनके चतुर्दिक विकास के लिए निरंतर प्रयास किया जा रहा है । उन्होंने कहा कि संचालित समेकित विद्यालयों के माध्यम से दिव्यांग जनों को शिक्षित करने का कार्य भी किया जाए। उक्त बातें प्रदेश के राज्य मंत्री खाद्य एवं रसद तथा नागरिक आपूर्ति विभाग सतीश चंद्र शर्मा ने ब्लाक संसाधन केंद्र बड़ेल विकास खंड बंकी में अयोजित समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों का उपकरण वितरण शिविर को संबोधित करते हुए कही। उपकरण वितरण कैम्प का शुभारंभ राज्य मंत्री खाद्य एवं रसद विभाग तथा नागरिक आपूर्ति उ.प्र.सरकार सतीश शर्मा एवं अध्यक्ष जिला पंचायत बाराबंकी राज रानी रावत ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया । उपकरण वितरण कैम्प का आयोजन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार देव पांडेय के निर्देशन में एवं जिला समन्वयक समेकित शिक्षा सुधा जायसवाल और खंड शिक्षा अधिकारी बंकी सुषमा सेंगर, खंड शिक्षा अधिकारी देवां राम नारायण की देखरेख में किया गया। उन्होंने बेसिक शिक्षा अधिकारी को बधाई देते हुए कहा कि आगे भी ऐसे विशेष बच्चों के लिए इस तरीके के कार्यक्रम आयोजित कराया जाए, जिससे इनका मनोबल बढ़ता रहे। उन्होंने कहा कि दिव्यांग जनों को शिक्षित एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रदेश सरकार लगातार हर संभव प्रयास कर रही है।

इस अवसर पर तहसील नवाबगंज के समस्त विकास खंड एवं विकास खंड राम नगर,दरियाबाद, बनीकोडर, पूरेडलाई, के 175 विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को उपकरण वितरण किये गये ।जिसमें 20 ट्राई साईकिल, 45 व्हील चेयर, 7 रोलेटर ,114 कान की मशीन, 4 सुगम्य केन,10 ब्रेल किट 22 सी.पी.चेयर, 14 कैलीपर दिये गए। उपकरण पाकर बच्चों के चेहरे पर खुशी देखते बनती थी । इसी क्रम में तहसील फतेहपुर में एवं 10 नवंबर को तहसील हैदरगढ़ में उपकरण वितरण किये जाएंगे।

रामलीला !अधर्म पर हुई धर्म की विजय रावण दहन सम्पन्न

❖ भीतरगांव में चल रही रामलीला के अंतिम दिन हुआ कुम्भकर्ण,मेघनाथ व रावण वध का मंचन।

❖ पिछले कई वर्षों से मां आनंदी रामलीला कमेटी भीतरगांव किया जा रहा है रामलीला का मंचन।

द अचीवर टाइम्स देवराज

रायबरेली! गुरुबक्शगंज क्षेत्र के भीतरगांव में चल रही रामलीला का मंगलवार को रावण वध के बाद रावण के पुतले का दहन कर समापन किया गया !उसके उपरांत भगवान श्रीराम ने अपने अनुज लक्ष्मण को लंका में भेजकर रावण के छोटे भाई विभीषण का राज्यभिषेक कराया !उसके बाद प्रभू श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण व पत्नी सीता सहित वापस अयोध्या आये,जहाँ पर गुरु वशिष्ठ द्वारा प्रभू श्रीराम का राज्याभिषेक किया गया !गौरतलब हो कि पिछले कई वर्षों से मां आनंदी रामलीला कमेटी भीतरगांव द्वारा भीतरगांव में रामलीला का मंचन किया जा रहा है !इस बार भी बीती 31 अक्टूबर से चल रही रामलीला का मंगलवार को समापन किया गया !अंतिम दिन की लीला में रामविलाप, कुम्भकर्ण वध, मेघनाथ वध व रावण वध का मंचन किया गया! चल रही रामलीला के मंगलवार को लक्ष्मण व मेघनाथ के बीच घनघोर युद्ध हुआ, उसके बाद शेषावतार लक्ष्मण ने मेघनाथ का वध कर दिया !फिर उसके पश्चात राम रावण का भीषण युद्ध हुआ और फिर उसके बाद विभीषण द्वारा भेद बताने के बाद भगवान श्रीराम ने रावण का वध कर दिया !उसके पश्चात रावण के पुतले को भगवान श्रीराम के द्वारा बाण छोड़कर जलाया गया !कार्यक्रम में भूमिका निभाने वाले अरविंद सिंह (बच्चा सिंह) ने राम,हिमांशु शुक्ला ने लक्ष्मण,किशोरी ने सीता,सौरभ मिश्रा (मनीष) ने रावण,गोपाल मिश्रा ने मेघनाथ,गोवर्धन शर्मा ने कुम्भकर्ण,रविन्दु सिंह ने हनुमान,यशपाल सिंह ने दशरथ,परशुराम व अंगद का अभिनय किया !कार्यक्रम के अध्यक्ष यशपाल सिंह व उपाध्यक्ष होरिलाल सैनी एवं संरक्षक लक्ष्मीकांत मिश्रा ने आये हुए सभी कलाकारों व दर्शकों का आभार व्यक्त किया !रामलीला का निर्देशन बिल्लू मिश्रा ने किया ! रामलीला मैदान में हजारों की संख्या में दर्शक व गांव के सभी सम्मानित नागरिक एवं पत्रकार बंधु उपस्थित रहे !

एक नज़र

विश्वविद्यालय के बीटेक आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स एण्ड मशीन लर्निंग के 7 छात्र - छात्राओं का पेटीएम कंपनी में हुआ प्लेसमेंट

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ के इंजीनियरिंग संकाय में पेटीएम ने प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया। भाषा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो एन बी सिंह के मार्गदर्शन में हुई। कुलपति प्रो. सिंह ने सफल हुए सभी विद्यार्थियों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट सेल द्वारा कराया गया। ड्राइव की मुख्य भूमिका आर्टफिशल इन्टेलिजन्स एण्ड मशीन लर्निंग के विषय प्रभारी डॉ सुमन कुमार मिश्र द्वारा निभाई गई। इन विद्यार्थियों को मिला प्लेसमेंट = अनिकेत प्रभाकर, तनिष्क, समीर मणि, गणेश, अर्जुन, अभिषेक एवं अज़ीम असलम का चयन पेटीएम कंपनी में 2.5 लाख के सालाना पैकेज पे हुआ। अभियांत्रिकी एवं प्रोद्योगिकी के निदेशक प्रो एस के त्रिवेदी ने सभी चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

सूचना एव जनसम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश सरकार की नीतियो का प्रचार प्रसार नव अंशिका फाउंडेशन ने नुक्कड़ नाटक के द्वारा उत्तराखण्ड महोत्सव मे किया गया

संवाददाता

लखनऊ। उत्तराखण्ड महोत्सव मे सूचना एव जनसम्पर्क विभाग के द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार की नीतियो के प्रचार प्रसार के लिए नव अंशिका फाउंडेशन की नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति ÷लड़का लड़की एक समान सबको शिक्षा का खेल कूद का समान अधिकार ÷ पर नुक्कड़ नाटक के द्वारा बेटियो को शिक्षा के साथ साथ खेल कूद में भी आगे बढ़ाए पर आधारित प्रस्तुती की गई जिसे महोत्सव में आए हुए सभी लोग ने बहुत सराहा और नीशू त्यागी ने नारी सशक्तिकरण को और भी ज्यादा मजबूत करने की सभी से अपील करते हुए उन्होने कहा कि लड़का लड़की एक समान सबको शिक्षा और खेल कूद का समान अधिकार÷ देते हुए महिलाओ को सशक्त बनाना ही हमारी उत्तर प्रदेश सरकार प्रमुख भूमिका निभा रही हैं।

लखनवी तहजीब की यादें संजोये अपने-अपने देश रवाना हुए 61 देशों के मुख्य न्यायाधीश व न्यायाधीश

संवाददाता

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल द्वारा आयोजित 'विश्व के मुख्य न्यायाधीशों के 24वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' में प्रतिभाग हेतु लखनऊ पधारे 61 देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्य न्यायाधीश, न्यायाधीश व अन्य प्रख्यात हस्तियों ने अपने-अपने देश रवाना होने से पूर्व लखनऊ भ्रमण किया और लखनऊ की ऐतिहासिक इमारतों, लखनऊ की गंगा-जमुनी तहजीब एवं लखनऊ की साँस्कृतिक विरासत की यादें संजोये अपने-अपने देश रवाना हो गये। यह जानकारी सी.एम.एस. के मुख्य जन-सम्पर्क अधिकारी श्री हरि ओम शर्मा ने दी है। श्री शर्मा ने बताया कि स्वदेश रवानगी से पूर्व ऐतिहासिक नगरी लखनऊ भ्रमण पर निकले ये सभी विदेशी अतिथि खासे उत्साहित व प्रफुल्लित थे। लखनऊ की गलियों में घूमते हुए इस दल ने विश्व एकता व विश्व शांति का अद्भुद दृश्य उपस्थित किया। ये सभी विदेशी अतिथि बड़ा इमामबाड़ा, छोटा इमामबाड़ा, रेजीडेन्सी इत्यादि ऐतिहासिक स्थलों को देखने गये। लखनऊ दर्शन के दौरान इन विदेशी मेहमानों ने कलात्मक वस्तुओं की जमकर खरीदारी की एवं साथ ही विभिन्न प्रकार के लजीज पकवानों का भी जमकर आनन्द उठाया। एक अनौपचारिक वार्ता में न्यायविदों व कानूनविदों ने कहा कि भारतीय संस्कृति बहुत गहरी है व यहाँ की सोच विश्वव्यापी है। यहां हमें बहुत प्यार और मुहब्बत मिली है और हम फिर से भारत आना चाहेंगे।

बेटियों पे लाठीचार्ज कर रही उत्तर प्रदेश पुलिस

वेतन तो बढ़ा नही पर बेटियों को दीवाली के बोनस में लाठी मिली

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

मुन्नीपाल सैयद जरीन पूजा शुक्ला, मेहनाज खान विजयश्री आदि लोग मौजूद रहे।

लखनऊ। डायल 112 में कार्य कर रही बेटियां वेतन बढ़ाने के लिए इको गार्डन में धरना पर बैठी बेटियों पे उनके ही डिपार्टमेंट के ही लोग लाठियां बरसाई योगी सरकार में जो अपना अधिकार मांगे उस पे लाठी डंडे बरसाई जा रही विजय श्री जिला अध्यक्ष समाज वादी पार्टी के अन्य कार्यकताओं ने बेटियों के धरने पे पहुँच कर उनकी मांगे पूरी हो बेटियों के बीच मे पहुची पर योगी सरकार में पुलिस सिर्फ गुंडागर्दी करने पे उतारू है विजय श्री ने घोर निंदा किया जो पुलिस बर्बरता की बेटियों के

कृष्णा नगर में नए थाना प्रभारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने संभाली कमान

❖ अपराधियों पर अंकुश लगाना होगी प्राथमिकताएं -जितेंद्र प्रताप

द अचीवर टाइम्स निर्मल सैनी

लखनऊ । कृष्णा नगर के नवनियुक्त थाना प्रभारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने पदभार ग्रहण करते हुए कहा कि क्षेत्र में अपराध किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पीड़ितों को न्याय दिलाने उनकी पहली प्राथमिकता होगी। आपको बता दें कि लखनऊ कमिश्नरेट के हुसैनगंज थाने की कमान संभाल रहे,इंस्पेक्टर जितेंद्र प्रताप सिंह को कृष्णा नगर थाने का प्रभारी निरीक्षक बनाया गया है,तो वहीं कृष्णा नगर थाने की कमान संभाल रहें विक्रम सिंह को हजरतगंज का प्रभारी निरीक्षक बनाया गया है। कृष्णा नगर के नए थाना प्रभारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने कहा की समाज के सहयोग से कृष्णा नगर थाना क्षेत्र में अपराध में अंकुश लगाया जाएगा। अपराध को नियंत्रण करने के लिए पुलिस विभाग के उच्चाधिकारियों को निर्देश के साथ अपनी सहयोगियों के साथ टीम भावना के साथ काम करेंगे। थाना में आने वालों का आदर सम्मान के साथ कार्य किया जाएगा। पब्लिक व पुलिस की आपसी सहभागिता को सजग बनाए रखेंगे। थाना क्षेत्र के लोग बिना किसी डर भय के अपनी समस्याओं को हमारे पास आकर बता सकते हैं। साथ ही उनके मोबाईल नंबर पर सूचना दे सकते हैं।साथ ही यह भी कहा कि मैं थाना परिसर में बैठकर प्रार्थियों की समस्या सुनने के लिए सदैव उपस्थित रहूँगा और पीड़ितो को न्याय दिलाना मेरी पहली प्राथमिकता है।

अकाउंटेंट नदारद, संबद्ध मिले 6 सचिव व 10 सफाई कर्मचारी

बाराबंकी। पंचायती राज विभाग में भ्रष्टाचार के मामले में बुधवार को सीडीओ जांच करने पहुंचीं तो हालात चर्चाओं के अनुरूप मिले। एकतरफ जहां पूरे मामले का सूत्रधार बताया जा रहा अकाउंटेंट नदारद मिला तो तमाम सफाई कर्मचारी व सचिव कार्यालय से संबद्ध होकर कार्य करते मिले। अकाउंटेंट के नदारद होने से कई वित्तीय पत्रावलियां भी सीडीओ के सामने प्रस्तुत नहीं हो सकीं। सीडीओ ने डीपीआरओ समेत अन्य लोगों के बयान दर्ज किए, जबकि अकाउंटेंट का वेतन रोकते हुए बृहस्पतिवार को बयान दर्ज कराने के लिए तलब किया है। सीडीओ एकता सिंह ने सबसे पहले डीपीआरओ कार्यालय पहुंचकर उपस्थिति रजिस्टर मंगाकर जांच की। इसके बाद अकाउंटेंट राकेश त्रिवेदी को बुलवाया तो वह नदारद मिला।

शिक्षिका व उसके ड्राइवर पर केस दर्ज,जांच शुरू

संवाददाता

सूरतगंज बाराबंकी। शिक्षा क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय में दलित छात्र की पिटाई करने वाली शिक्षिका व उनके ड्राइवर पर पुलिस ने केस दर्ज करके छानबीन शुरू कर दिया है। ज्ञात हो कि थाना मोहम्मदपुर खाला की पुलिस चौकी सूरतगंज इलाके के कुतलूपुर मजरे उमरी प्रथम स्थित कंपोजिट विद्यालय में तैनात महिला शिक्षिका उर्मिला राय व उनके ड्राइवर विष्णु के द्वारा बीते 4 नवम्बर को इसी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले कुतलूपुर गांव के 8 वर्षीय छात्र के द्वारा उनकी कार छूने पर आग बबूला होकर शिक्षिका व ड्राइवर ने मिलकर उस छात्र की जमकर पिटाई कर दिया था। जिसके कारण दलित परिवार के मासूम बच्चे का दांत और जबड़ा हिल गया था। जब इसकी जानकारी लेने परिजन विद्यालय पहुंचे तो उनसे भी भद्रता की गई थी। जिससे नाराज पीड़ित छात्र संघ के पिता ने पुलिस क्षेत्राधिकार फतेहपुर को लिखित प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई थी। पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर लिया है। वहीं सूत्रों की माने तो इस शिक्षिका का विवादों से पुराना नाता है पहले भी ड्यूटी के दौरान विद्यालय में सो रही थी। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ था। बताया जा रहा है कि रसूखदार व ऊंची पहुंच रखने वाली शिक्षिका ने वीडियो बनाकर वायरल करने वाले पर धमकी देने के साथ पूर्व में मुकदमा भी दर्ज करा चुकी है। उसके बाद अब फिर से विवादों में आना समूचे क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। इस पूरे मामले में पुलिस कार्यवाही के साथ ही बुधवार को खंड शिक्षा अधिकारी संजय कुमार राय ने विद्यालय परिसर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और पूछताछ भी की। इस दौरान स्कूल परिसर के बाहर स्थानीय ग्रामीणों का हुजूम उमड़ा रहा। उधर इस पूरे मामले की जांच पुलिस गहनता से कर रही है। अब देखने वाली बात यह होगी कि शिक्षा विभाग द्वारा विभागीय कार्रवाई होती है। या फिर मामला यूं ही पड़ा रहता है।

किसान मंच के प्रदेश प्रवक्ता राहुल पांडे लगातार क्षेत्र मे किसने की कर रहे हैं मदद

❖ राहुल पांडे के साथ लगातार बढ़ रहा करवा।

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। विधानसभा बख्शी तालाब के अंतर्गत ग्राम पंचायत लौहंगपुर में किसान मंच के प्रदेश प्रवक्ता व प्रदेश सचिव राहुल पांडे की उपस्थिति में किसानों की जन समस्याओं को लेकर काफी भारी सैकड़ो संख्या में किसानों की उपस्थिति रही किसानों की सभी जन समस्याओं को लेकर राहुल पांडे ने सभी किसान भाइयों को उनको हक दिलाने के लिए सभी उच्च अधिकारियों से बात करने के लिए और किसानों की समस्याओं को सरकार तक पहुंचाने के लिए बात कही फिर वहीं पर किसान मंच के संगठन के विस्तार को लेकर किसान भाइयों से चर्चा भी हुई जिसमें उपस्थित किसान मंच के ब्लॉक सचिव कुशाग्र पाठक अरुण प्रकाश तिवारी राधेश्याम रावत हेमराज प्रजापति रमेशचद्र लक्ष्मण नीरज शिवम कुसुम देवी मीनू रामकली पूनम रामरानी रामदयाल बृजरानी फूलमती गौतम मीना नत्था आदि लोग मौजूद रहे।

एस.एम.एस. गन्ना पर्ची प्राप्त करने के लिये मोबाइल फोन चालू रखें गन्ना किसान

द अचीवर टाइम्स निशांत शुक्ला

हरदोई। जिला गन्ना अधिकारी निधि गुप्ता ने अवगत कराया कि जनपद में डी.सी.एम. श्रीराम शुगर यूनिट की स्थापित चीनी मिलें कृमशः हरियावां, लोनी व रूपापुर आदि ने अपना पेराई सत्र 2023-24 का शुभारम्भ कर दिया है। जो इस जनपद की सहकारी गन्ना विकास समितियों में हरदोई-गेट, ग्रोवर्स, रूपापुर, बघौली व मल्लावां परिक्षेत्र के गन्ना कृषकों द्वारा समितियों से जारी पर्चियों पर निश्चित समयावधि के अन्तर्गत गन्ने की आपूर्ति भी प्रारम्भ कर दी गयी है। जिसके साथ ही साथ जनपद के सभी कृषक भाइयों को सावधान रहने हेतु अपील की है कि किसान भाइयों को निम्न विन्दुओं पर ध्यानाकर्षण हेतु अवगत कराया जा रहा है। कि कृमशः जनपद के गन्ना किसानों से अपील है कि अपने पंजीकृत मोबाइल नम्बर का इनबॉक्स खाली रखें तथा अपने मोबाइल को चालू रखें। किसान अपने पंजीकृत नम्बर पर डी. एन.डी. सर्विस को एक्टीवेट न करायें, जिससे एस. एम.एस. गन्ना पर्ची मोबाइल पर उन्हें रियल टाइम में प्राप्त हो सके। कृषक बंधु अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर की जॉच कर लें यदि मोबाइल नंबर गलत है, तो उसे गन्ना समिति के माध्यम से अथवा ई गन्ना एप् के द्वारा स्वयं अपडेट कर लें । पेराई सत्र 2023-24 में गन्ना पर्चियां केवल एस.एम.एस. पर्ची के रूप में गन्ना किसानों के पंजीकृत मोबाइल नंबर पर प्रेषित की जा रही है। इस संबन्ध में विस्तृत जानकारी देते हुए श्रीमती निधि गुप्ता ने बताया कि विभाग द्वारा किसानों को गन्ना आपूर्ति हेतु उनके मोबाइल पर प्रेषित की जाने वाली लगभग 10 प्रतिशत एस. एम. एस. गन्ना पर्चियों की डिलीवरी प्रतिदिन फेल हो रही है, क्योंकि किसानों के ई.आर.पी. पर पंजीकृत मोबाइल नेटवर्क क्षेत्र में उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं या उनके मोबाइल का इनबॉक्स भरा होने, मोबाइल स्विच ऑफ होने एवं डी.एन.डी. एक्टिवेट होने की स्थिति में एस0एम0एस पर्ची का संदेश 24 घंटे के पश्चात् स्वतः निरस्त हो जाता है। इस कारण किसानों को अपनी पर्ची की जानकारी नहीं हो पाती है। इस तकनीकी समस्या के निवारण के लिये अनिवार्य है कि सभी किसान भाई एस.एम.एस. पर्ची प्राप्त करने के लिए अपने मोबाइल को नेटवर्क क्षेत्र में रखें, अपने मोबाइल का एस.एम.एस. इनबॉक्स खाली रखें तथा मोबाइल को चार्ज करके सदैव चालू दशा में रखें, तथा डी. एन. ए. सर्विस को एक्टिवेट न करें ताकि सर्वर द्वारा प्रेषित एस.एम.एस. गन्ना पर्ची उनके मोबाइल पर उन्हें रियल टाइम में प्राप्त जाये। पर्ची निर्गमन में यह व्यवस्था पूर्णतयाः परदर्शी है। उन्होंने जनपद की सभी चीनी मिलो एवं गन्ना विकास विभाग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी निर्देशित किया है कि वह इसका व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करते हुए एक अभियान चलाकर सभी गन्ना किसानों के सही मोबाइल नंबर अपडेट कराना सुनिश्चित करें ताकि कृषकों को गन्ना आपूर्ति कोई असुविधा न हो।

सम्पादकीय

सरकार ने बताए पूर्वांचल एक्सप्रेस वे के फायदे, जानिए क्या हैं नुकसान

पूरे देश में एक्सप्रेस वे को विकास का कीर्तिमान मानते हुए स्थापित किया जा रहा है. कहीं गंगा, कहीं यमुना, कहीं बुंदेलखंड तो कहीं ताज एक्सप्रेस वे पर फर्राटा मारती गाड़ियों से दूर उन एक्सप्रेस वे के किनारे के गांवों की क्या हालत है इस पर सरकार बात नहीं करती. विकास अगर देश कर रहा है तो जिनकी जमीनों को लेकर विकास का ढिंढोरा पीटा जा रहा है उनका कितना विकास हुआ इस बात पर भी सोचना होगा. वहीं किसान फसलों को बचाने के लिए अपने खेतों में लोहे की बाड़ लगाए तो उसको अपराध मानते हुए मुकद्दमा पंजीकृत किया जाता है. वहीं सरकार एक्सप्रेस वे के किनारे कटीले तारों की बाड़ लगाती है तो उसे सुरक्षा का मापदंड कहा जाता है. बाड़ लगाकर फसलों की सुरक्षा करना अपराध है तो एक्सप्रेस वे के किनारे सुरक्षा के नाम पर बाड़ लगाना क्यों नहीं अपराध की श्रेणी में आता है. क्या उससे टकराकर जानवर घायल नहीं होते. एक व्यक्ति द्वारा पशु करुरता करने से बड़ा अपराध सरकार द्वारा की गई पशु क्रूरता है. जब राज्य यह जानते हुए कि बाड़ लगाने से पशु घायल हो जाएंगे और यह गैरकानूनी है तो भी अपने ही बनाए कानून के खिलाफ जानते हुए जाना गंभीर अपराध है. इसे इसलिए अपराध नहीं माना जाएगा क्योंकि यह आधुनिक विकास का मापदंड बना दिया गया है. बहुफसली जमीनों को खत्म करके एक्सप्रेस वे की दीवार खड़ी की गई है. इसने न सिर्फ सदियों से बसे गावों के आवागमन को प्रभावित कर दिया है बल्कि बारिश के मौसम में बहुतायत इलाकों में जल जमाव हो जाता है. एक्सप्रेस वे बनाने के लिए मिट्टी की जरूरत के चलते बड़े पैमाने पर उपजाऊ भूमि का खनन करके खेतों को गड्ढा बना दिया गया है. यह कैसा विकास जिसके चलते जो इलाके जल जमाव से ग्रसित नहीं थे उनमें जल जमाव होने लगा. जिसके कारण बड़े पैमाने पर मच्छर की वजह से मलेरिया, डेंगू जैसी बीमारियां पैदा हो रही हैं. पिछले बारिश के मौसम में पूर्वांचल में फैले डेंगू की वजह से बड़े पैमाने पर लोगों की मौत हुई जिसमें बड़ा कारण विभिन्न सड़कों के जाल की वजह से हो रहा जल जमाव रहा है. जल निकास की समुचित व्यवस्था नहीं हो पा रही है और यह संभव भी नहीं प्रतीत होता है.. बड़े-बड़े महानगरों में डेंगू फैलता है तो सरकार जल जमाव पर त्वरित कार्रवाई करती है वहीं दूसरी तरफ गांव में सरकार की नीतियों के चलते जल जमाव हो रहा. जिसके कारण डेंगू जैसी जानलेवा बीमारी लोगों की जान ले रही है. सवाल कर सकते हैं कि एक्सप्रेस वे किनारे बाड़े नहीं लगाए जाएंगे तो सड़क पर दुर्घटना का खतरा बना रहेगा. जिस नीति के तहत सरकार एक्सप्रेस वे के किनारे बाड़े लगा सकती है तो उसी नीति के तहत खेतों के किनारे बाड़े सरकारी खर्च पर क्यों नहीं लगने चाहिए. सड़क के बगैर जीवन की कल्पना की जा सकती है पर अनाज के बगैर जीवन की कल्पना असंभव है. पूर्वांचल एक्सप्रेस वे के किनारे के गांव के लोग जिनकी जमीनें एक्सप्रेस वे में गईं उनका कहना है कि सरकार ने कहा था कि नौकरी देंगे, नौकरी तो नहीं मिली पर आज यदि उनके बकरे-बकरी एक्सप्रेस वे के बाड़े के अंदर चले जाते हैं तो अथॉरिटी वाले न सिर्फ उठा ले जाते हैं बल्कि मुकदमे की धमकी देते हुए अवैध वसूली भी करते हैं. एक्सप्रेस वे में जिन किसानों की पट्टे की जमीन गई उनको मुआवजा नहीं दिया गया. सवाल यह है कि अगर किसी व्यक्ति के नाम से कोई जमीन किसी भी रुप में है तो उसका वह मुआवजे का अधिकारी होना चाहिए. पट्टे पर जमीन सरकार ने उन्हीं को दिया होगा जिनके पास जमीनें नहीं थीं. इसका मतलब वह भूमिहीन थे. एक भूमिहीन व्यक्ति जिसको सरकार द्वारा पट्टे पर जमीन दी गई उसकी जमीन को एक्सप्रेस वे जैसी विकास परियोजना के द्वारा छीन लेना क्या यही विकास का मापदंड है. भूमि वाले को भूमिहीन बनाने वाला यह कैसा विकास है. होना तो यह चाहिए कि अभी तक जिनके पास जमीन नहीं है उन्हें भी जमीन आवंटित की जाए. पर इसके विपरीत यहां जमीन छिनी जा रही है. एक्सप्रेस वे में बड़े पैमाने पर ग्रामसभा की भी जमीनें गईं हैं. उनका कोई मुआवजा नहीं दिया गया है. यह एक मजबूत धारणा बनती जा रही है जिसके तहत शासन ग्रामसभा की जमीन को अधिग्रहण कर लेता है, जिसके पीछे वह तर्क देता है कि वह सरकारी जमीन है. अगर वह सरकारी जमीन है तो ग्राम सभा से सहमति लेने की क्या जरूरत है, लेकिन जरूरत इसलिए पड़ती है क्योंकि वह सरकारी जमीन नहीं है बल्कि ग्राम सभा की जमीन है. ग्रामसभा की जो जमीनें चाहे घूर गड्ढा, कब्रिस्तान, चारागाह, खेल का मैदान यह सभी ग्रामवासियों की जमीन से ही चकबंदी में काटकर उनके सामूहिक इस्तेमाल के लिए बनाई गई हैं. लेकिन आज उसको सरकारी जमीन कहकर छीना जा रहा है. तालाब को पाटने या उसके किनारे भीटे पर घर बनाने पर बुलडोजर चला दिया जाता है. पेड़ काटने पर पुलिस पकड़ ले जाती है. वहीं सरकार विकास के नाम पर जलाशय, पेड़ों को कैसे काट सकती है. कृषि संकट और वनभूमि का क्षेत्रफल लगातार कम हो रहा जिसके चलते हीट वेव, हीट स्ट्रोक के चलते लोगों की मौत हो रही है. सवाल यह है कि आम नागरिक करे तो गैर कानूनी और सरकार करे तो विकास यह कैसे संभव है. जबकि होना यह चाहिए कि अगर सरकार कोई क्राइम करे तो उसकी सजा नागरिक की सजा से ज्यादा होनी चाहिए. क्योंकि कानून का पालन करना, करना उसकी जिम्मेदारी और जवाबदेही होती है. और अगर खुद कानून तोड़ेगी तो किस अधिकार से पालन कराएगी. होना तो यह चाहिए कि ग्राम सभा की जिन जमीनों को अधिग्रहित किया गया है उसके नुकसान के एवज में ग्रामसभाओं को मुआवजा दिया जाए. पर यहां पर उनकी जमीन को लेकर पीपीपी मॉडल पर मुनाफाखोर पूंजीपतियों को दे दिया जाता है. विकास परियोजनाओं में देखा जाता है कि दूर दराज से मजदूर लाए जाते हैं, माना जाता है कि पास का मजदूर रहेगा तो वह कामचोरी करेगा. इस मानसिकता के चलते जिनकी जमीनें जाती हैं उनको कोई रोजगार नहीं मिलता. आमतौर पर सड़कों के बनने से यह धारणा विकसित है कि रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे, उन सड़कों के किनारे छोटी दुकानों से रोजगार मिलेगा. पर एक्सप्रेस वे इस धारणा को तोड़ देता है. अपनी ही जमीन पर बनी सड़क पर किसान को टोल देना पड़ता है, यहां तक कि बाइक को भी. एक्सप्रेस वे बनने की प्रक्रिया में बड़े पैमाने पर मिट्टी का दोहन किया जाता है. खेतों से मिट्टी निकालकर सड़क बनाई जाती है. एक विशालकाय सड़क तो बन जाती है लेकिन खेतों की उपजाऊ मिट्टी बरबाद हो जाती है. खेतों से बेतहाशा मिट्टी निकालने की वजह से उर्वर भूमि खत्म हो जाती है और समतल खेत गड्ढों में तब्दील होते जाते हैं. किसान ने वर्षों में हाड़तोड़ मेहनत से जमीन को उपजाऊ बनाया उसे एक झटके में समाप्त कर दिया जाता है. खेत सड़क के एक किनारे और घर दूसरे किनारे. सदियों से बसे एक गांव से दूसरे गांव के संबंधों को न सिर्फ खत्म कर दिया जाता बल्कि औद्योगिक पार्क, एयरपोर्ट के नाम पर गांव का अस्तित्व इतिहास समाप्त कर दिया जाता है. जिस तरीके से नदियों पर बने बांधों से गावों को खतरा होता है उसी तरह से एक्सप्रेस वे के किनारे बसे गांव भी संकट में हैं. सरकार ने कई एक्सप्रेसवे की परियोजनाएं नदियों के किनारे बना कर हमारी नदी घाटी सभ्यता को तहस नहस कर दिया है. जिन नदियों के किनारे उपजाऊ खेत थे उनपर एक्सप्रेस वे को बनाना देश को खाद्य संकट की तरफ ले जाना है. क्योंकि आज जिस तरीके से एक्स्प्रेस वे के किनारे के गावों में औद्योगिक क्षेत्र और पार्क के नाम पर जमीनें छीनने की साजिश हो रही है उससे इन इलाकों के गावों की जल, जंगल और जमीन प्रभावित होंगे. इसका असर न सिर्फ अधिग्रहित क्षेत्र पर पड़ेगा बल्की आसपास की खेती किसानी पर भी पड़ेगा. क्योंकि उद्योगों के चलते जल का बड़े पैमाने पर दोहन के साथ प्रदूषण होगा, जिसका खेती पर व्यापक असर होगा. जमीन जाने के डर से लोग परेशान रहते हैं कि घर, जमीन जाने के बाद कहां जाएंगे. सरकारें कई बार सामान्य तौर से कह देती हैं की सिर्फ जमीन ली जाएगी. लेकिन जिसकी जीविका ही जमीन से जुड़ी हो उसका घर न लेकर जमीन लेने के बाद उसके जीविका का साधन क्या होगा. इससे घबराहट बनी रहती है. जमीन जाने के बाद मुआवजे में मिले पैसों को लेकर भी व्यक्ति परेशान होता हं अन्य कहीं जमीन लेने जाता है तो मुआवजे का जो हौव्वा खड़ा किया गया है उसके चलते उसको महंगी जमीन मिलती है. खेती की जमीन के अधिग्रहण के बाद किसान फिर खेती के लिए जमीन नहीं ले पाता।

रश्मिका मंदाना का डीपफेक वीडियो AI ने हमें कितना लाचार बना दिया!

बॉलिवुड की दो अभिनेत्रियों के डीपफेक वीडियोज ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के एक बड़े खतरे से रू-ब-रू करवा दिया है। एआई कई मायनों में क्रांतिकारी है जिसका हमें लाभ मिल रहा है और मिलेगा, लेकिन डीपफेक्स कंटेंट तैयार करने की इसकी क्षमता कई तरह के गंभीर खतरे पैदा कर रहे हैं।

रश्मिका मंदाना और कैटरिना कैफ के हालिया डीपफेक वीडियोज बताते हैं कि हम कितने लाचार और बेबस हैं। एआई के सामने हमारी कुछ नहीं चलती। हम उसके शिकार हैं। एआई के जमाने में ऐसा डीपफेक बनाना कोई बड़ी बात नहीं रह गई है जिसे असल मान लिया जाए। यूजर्स चेहरे की तस्वीरें शेयर करके एल्गोरिदम्स रन करने में एक-दूसरे की मदद करते हैं ताकि उनका एजेंडा पूरा हो जाए। इसका आम जन-जीवन पर बहुत गहरा असर पड़ रहा है। व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और स्वायत्तता की गंभीर चिंताजनक मुद्दों के अलावा धोखेबाजी और प्रपंच से लोकतंत्र प्रभावित हो सकता है। इतना ही नहीं, इससे हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो सकता है और बड़े पैमाने पर वित्तीय धोखाधड़ी हो सकती है। हाल ही में यूके की एक एनर्जी कंपनी के प्रमुख के साथ ऐसा हो चुका है। उसे उसके जर्मन सीईओ की आवाज में फोन आया और उसने पैसे भेज दिए। हालांकि, वह आवाज डीपफेक का नमूना ही थी। महिलाओं को जितना रोजमर्रा की जिंदगी में निशाना बनाया गया है, उतना ही वो वर्चुल वर्ल्ड में भी शिकार हुई। महिलाओं की तरह ही बेहद प्रतिष्ठित शख्सियतें भी खूब निशाने पर रहती हैं।

डीपफेक्स ने हमें लाचार बना दिया है!

इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलजी मिनिस्टर ने सोशल मीडिया और इंटरनेट कंपनियों पर लागू नियमों की बात की है। उन्होंने आईटी इंटरमीडियरी रूल 3(2)(बी) का भी उल्लेख किया जो इंटरमीडियरी को शिकायत मिलने के 24 घंटे के अंदर मॉर्फ्ड वीडियो, इमेज आदि को हटाने या डिजेबल करने का निर्देश देता है। लेकिन डीपफेक को रेग्युलेट करना वैश्विक चिंता का विषय है। अमेरिका ने फॉरन डीपफेक्स के लिए संघीय कानून बनाया है जबकि उसके नागरिकों की रक्षा के लिए एक विधेयक अभी लंबित है। अमेरिका के कुछ राज्यों ने भी बिना सहमति के डीपफेक बनाने को अपराध घोषित कर दिया है जबकि कुछ अन्य राज्यों ने इसे दीवानी मामलों के तहत रखा है। यूरोपियन यूनियन में भी डीपफेक्स को लेकर कानून बनाने पर गंभीरता से विचार हो रहा है। बड़ी टेक कंपनियां इस चिंता को लेकर प्रतिक्रिया दे रही हैं, लेकिन बहुत धीमे। समस्या यह है कि डीपफेक्स को ढूंढ पाना बहुत कठिन है क्योंकि विजुअल एक्सपर्ट्स जिन पैमानों पर असली और नकली का अंतर पता करते हैं, वो इसमें काम नहीं आते हैं। फर्जी कंटेट को पकड़ने वाली टेक्नॉलजी डीपफेक क्रिएटर्स से कदमताल नहीं मिला पा रही है। जब तक हमें बुरी टेक्नॉलजी से मुकाबले के लिए अच्छी टेक्नॉलजी के आने का इंतजार है, तब तक हम कर ही क्या कर सकते हैं? अगर आप भी इस बुरी तकनीक के शिकार हो जाएं तो बिल्कुल सावधान रहते हुए पुलिस में शिकायत करें।

दर्द से कराहते-लड़खड़ाते मैक्सवेल का कारनामा

सभी के लिए मिसाल, हीरो ऐसे ही तो बनते हैं..

बीते दिन जिस-जिस ने ऑस्ट्रेलिया-अफगानिस्तान का मैच देखा वह आने वाली पीढ़ियों को इसके बारे में जरूर बताएगा। इस मैच की कहानी और मैक्सवेल के जज्बे के जरिए उन्हें प्रेरित करने की कोशिश करेगा। जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव का सामना करने के लिए मैक्सवेल जैसे हीरो की कहानी की ही तो जरूरत होती है। भारत में हो रहे एकदिवसीय क्रिकेट विश्व कप में ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने मंगलवार को अफगानिस्तान के खिलाफ जो पारी खेली, वह अनोखी थी। उस नाबाद 201 के रन की पारी को वर्षों तक याद रखा जाएगा। 292 रन का पीछा करते हुए 100 रन पर सात विकेट गंवा चुकी ऑस्ट्रेलियाई टीम को जीत दिलाना किसी चमत्कार से कम नहीं है। यह कर के दिखाया है ग्लेन मैक्सवेल ने। चोटिल होने के बावजूद अफगानिस्तान के गेदबाजों के सामने चट्टान की तरह खड़े रहे। दर्द से कराहते रहे। लड़खड़ाते रहे। जरूरत पड़ी तो धीरे-धीरे मानों रेंगते हुए रन भी दौड़ते रहे, लेकिन हार नहीं मानी और नतीजा हम सभी के सामने है। आज हर किसी के जुबान पर मैक्सवेल का नाम है। हीरो ऐसे ही तो बनते हैं। बीते दिन जिस-जिस ने ऑस्ट्रेलिया-अफगानिस्तान का मैच देखा वह आने वाली पीढ़ियों को इसके बारे में जरूर बताएगा। इस मैच की कहानी और मैक्सवेल के जज्बे के जरिए उन्हें प्रेरित करने की कोशिश करेगा। जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव का सामना करने के लिए मैक्सवेल जैसे हीरो की कहानी की ही तो जरूरत होती है। यह कुछ वैसा ही था, जैसा कपिल देव ने 1983 के विश्व कप में जिम्बाब्वे के खिलाफ किया था। उस वक्त 17 रन पर पांच विकेट गंवा चुकी टीम इंडिया के लिए कपिल देव संकटमोचक बने थे। उनकी 175 नाबाद पारी ने हार की कगार पर खड़ी टीम को विश्व चैंपियन बनने का भरोसा दिलाया था। हमारे परिजन जो उस वक्त शायद हमारी उम्र के या हमसे छोटे रहे होंगे, हमें उनकी कहानियां सुनाकर ही तो प्रेरित करते हैं। हम आने वाली पीढ़ी को जो किस्से सुनाएंगे, उसमें मैक्सवेल की यह पारी भी होगी। सिर्फ खिलाड़ी ही नहीं, आम आदमी भी इससे बहुत कुछ सीख सकता है। हमारे रोजमर्रा की जिंदगी में कई अड़चनें आती हैं। कई हम आसानी से स्वीकार कर लेते हैं और कई बार उसका डटकर सामना करते हैं। ऐसे में जो लोग हार मानने को मजबूर हो जाते हैं, उनके लिए मैक्सवेल का करनामा बूस्टर जैसा हो सकता है। बस जरूरत है तो उसे आत्मसात करने की। मैक्सवेल की नाबाद 201 रन की पारी ने उनकी छवि ही बदल कर रख दिया है। अब तक कहा जाता था कि मैक्सवेल जिस मैच में चलते हैं, उसे जिताकर ही दम लेते हैं, लेकिन अब जब तक मैक्सवेल क्रीज पर रहेंगे, उनके देश और उनके फैंस की जीत की उम्मीद बरकरार रहेगी। हमारी भारतीय टीम में पूर्व क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर और महेंद्र सिंह धोनी जैसे खिलाड़ियों ने भी तो कुछ ऐसा ही किया था। अभी विराट कोहली भी तो यही कर रहे हैं। मैक्सवेल अब तक ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करने वाले विध्वंसक बल्लेबाज के तौर पर जाने जाते थे, पर अब उनके नाम के साथ करिश्माई बल्लेबाज का तमगा भी जुड़ जाएगा। सचिन, धोनी और कोहली जैसे खिलाड़ियों की फेहरिश्त में उनका नाम भी लिया जाएगा। मैक्सवेल की पारी ने कई पुराने ऐसे किस्सों को ताजा कर दिया है, जिसे आज भी याद किया जाता है। मेरे अब तक के जीवनकाल में कुछ ही ऐसी पारियां हैं, जिनकी यादें आज भी जहन में हैं। यहां हम 2011 के धोनी के उस विश्व विजयी छक्के की बात नहीं करेंगे, जिसने पूरे भारत को जश्न मनाने पर मजबूर कर दिया था। हम याद करेंगे दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज ग्रेम स्मिथ की उस पारी को, जहां उन्होंने टूटे हुए हाथ के साथ ऑस्टेलियाई गेंदबाजों की आग उगलती गेंदों का सामना किया था। वाकया है 2009 का, जब अफ्रीकी टीम ऑस्ट्रेलिया का दौरा कर रही थी। सिडनी में खेले गए तीसरे टेस्ट मैच अफ्रीका हार की कगार पर थी। उनके कप्तान के बाएं हाथ में फ्रैक्चर था, वे रिटायर्ड हर्ट होकर वापस पवेलियन जा चुके थे, लेकिन जब टीम को उनके देश को उनकी जरूरत पड़ी तो वह मैदान में उतरे। चोट के बावजूद मिचेल जॉनसन और पीटर सिडल का सामना किया। स्मिथ अपनी टीम को जीत तो नहीं दिला सके, लेकिन उनका दृढ़ संकल्प उनका देश के प्रति समर्पण का जज्बा आज भी जेहन में है। कुछ ऐसा ही जज्बा और समर्पण कल मैक्सवेल ने दिखाया। उन्होंने अपनी ताकत पर भरोसा रखा। ताबड़तोड़ बल्लेबाजी से ही तो उनकी पहचान बनी थी। उन्होंने इस पर भरोसा रखा और अफगानी गेंदबाजों की जमकर क्लास ली। उन्होंने पैट कमिंस के साथ 202 रन की पार्टनरशिप की। मैक्सवेल के करिश्मे का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इस 202 रन की साझेदारी में 179 रन मैक्सवेल के थे। मैक्सवेल 21 चौके और 10 छक्के जड़े। इसके मुकाबले अफगानिस्तान की पूरी टीम ने 16 चौके और नौ छक्के लगाए। ऐसे ही मैक्सवेल ने लगभग हार चुकी बाजी को जीत में बदला और अपनी टीम को सेमीफाइनल में पहुंचाया।

कठपुतली सरकार की तैयारी

सैन्य व्यवस्था के गणित में शरीफ को गले लगाने की बारी

जिस सैन्य व्यवस्था ने कभी नवाज शरीफ को देश से बाहर जाने पर मजबूर किया था, वही आज उन्हें गले लगाने के लिए तैयार है, क्योंकि इमरान खान की पार्टी की जीत की किसी भी संभावना को खत्म करने के लिए सेना के पास उनसे बेहतर कोई विकल्प नहीं है। कई विरोधाभासों एवं उथल-पुथल के बीच पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने वहां के चुनाव आयोग को आठ फरवरी, 2024 को आम चुनाव कराने की अंतिम तारीख तय करने के लिए मजबूर करने में अहम भूमिका निभाई, जिसे किसी न किसी बहाने से टाला जा रहा था और अनिश्चितता चरम पर थी। विश्लेषकों का मानना है कि इससे दो उद्देश्य पूरे हो सकते हैं। पहला, इससे पाकिस्तान के नाजुक लोकतंत्र के बारे में उम्मीदें जगेंगी, जिस पर हमेशा वहां की ताकतवर सेना द्वारा कब्जा किए जाने का खतरा रहता है। दूसरा, इससे स्थिरता की भावना पैदा होगी और कार्यवाहक सरकार को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से राहत पैकेज के लिए बातचीत करने में मदद मिलेगी। विश्लेषकों का मानना है कि यदि पाकिस्तान में लोकतंत्र कायम रहता है, तो यह भारत के लिए अच्छा संकेत है, क्योंकि पड़ोस में शांति रहने से सकारात्मक माहौल बनता है। आज जैसी स्थिति है, उसमें सेना की मदद से नवाज शरीफ के अगले प्रधानमंत्री बनने की संभावनाएं प्रबल हैं, जिससे भारत के प्रति शत्रुता थोड़ी कम हो सकती है। नवाज शरीफ ने पहले भी शांति की पहल की कोशिश की थी, हालांकि सैन्य जनरलों ने उसे विफल कर दिया था। कूटनीतिक सिद्धांत के अनुसार, भले ही दोनों देशों के रिश्तों को शत्रुता नियंत्रित करती हो, लेकिन बातचीत जारी रहनी चाहिए। यदि पाकिस्तान गंभीरता दिखाए और कश्मीर का मोह छोड़ दे, तो भारत फिर से बातचीत शुरू कर सकता है। शहबाज शरीफ की सरकार ने वित्तीय संकट को प्रमुख कारण बताकर चुनाव में देरी करने की कोशिश की थी और शीर्ष अदालत के आदेश को मानने से इन्कार कर दिया था, जिसे सेना का भी समर्थन था। विगत नौ अगस्त को पाकिस्तान की संसद भंग हो गई थी, जिससे अराजक शासन का अंत हुआ और आम चुनाव का मार्ग प्रशस्त हो गया। प्रधानमंत्री अनवार उल हक के नेतृत्व में कार्यवाहक सरकार ने चुनाव कराने की प्रक्रिया तेज कर दी। दिलचस्प बात यह है कि पाकिस्तान के चुनाव आयोग ने जनगणना और निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन आदि का हवाला देकर संसद भंग करने के बाद निर्धारित 90 दिनों के भीतर चुनाव कराने में असमर्थता जताई थी। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन, पाकिस्तान तहरीक-ए इंसाफ तथा अन्य ने चुनाव आयोग को समय पर चुनाव कराने का निर्देश देने के लिए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को राष्ट्रपति अल्वी के साथ इस मुद्दे पर चर्चा करने का निर्देश दिया। इस तरह आम चुनाव कराने की अंतिम तारीख आठ फरवरी तय की गई। पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की वतन वापसी का समय कोई संयोग नहीं है, बल्कि असीम मुनीर के सेना प्रमुख बनने के बाद सेना ने सावधानीपूर्वक इसकी योजना बनाई थी, जिसका उद्देश्य पाकिस्तान की सियासत में सेना की सर्वोच्चता को चुनौती देने वाले इमरान खान को ठिकाने लगाना है। जिस सैन्य व्यवस्था ने कभी नवाज शरीफ को देश से बाहर जाने पर मजबूर किया था, वही आज उन्हें गले लगाने के लिए तैयार है, क्योंकि पाकिस्तान के मौजूदा उथल-पुथल भरे दौर में उनसे बेहतर विकल्प उपलब्ध नहीं है। सेना ने तीन बार नवाज शरीफ को सत्ता से बेदखल किया और अब चुनाव से ठीक पहले नवाज की वापसी ने सेना का काम आसान कर दिया। नवाज शरीफ इमरान खान के प्रति कटुता से भरे हुए हैं, इसलिए सुलह की कोई संभावना नहीं है और प्रमुख विपक्षी दल पीटीआई को कोई मौका नहीं दिया जा रहा है। इमरान की गिरफ्तारी के बाद उनकी पार्टी पीटीआई की स्थिति खराब हो गई है और एक अदालत ने उनके खिलाफ मुल्क के गोपनीय दस्तावेजों को लीक करने का आरोप लगाया है, जिसमें उन्हें मौत की सजा भी हो सकती है। चुनाव आयोग द्वारा अयोग्य घोषित कर दिए जाने के बाद जब तक उन्हें हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं मिल जाती, तब तक वह चुनाव नहीं लड़ सकते। विश्लेषकों का कहना है कि पिछले एक साल के दौरान चार घटनाओं ने पूरे पाकिस्तान के सियासी माहौल को बदलकर रख दिया है। पहली घटना, मई, 2023 में नेशनल एसेंबली में एक विधेयक पारित किया गया, जिसमें आजीवन अयोग्यता की अवधि को घटाकर पांच साल कर दिया गया, जिसका उद्देश्य नवाज शरीफ की वापसी सुनिश्चित करना था। दूसरी घटना, नौ मई को इमरान समर्थकों द्वारा सेना मुख्यालय में तोड़फोड़ की है, जब सेना प्रमुख मुनीर को अपनी स्थिति मजबूत करने का सुनहरा मौका मिला। मुनीर ने तीन वरिष्ठ अधिकारियों को बर्खास्त करके अपने अधिकार को प्रदर्शित किया, जो देश की घरेलू राजनीति को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त है। तीसरी घटना इमरान समर्थक सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश की जगह नए प्रधान न्यायाधीश के रूप में काजी फैज ईसा की नियुक्ति है, जिसने नवाज की पार्टी को बड़ी राहत दी, जो उनसे निष्पक्ष फैसले की उम्मीद करती है। चौथी घटना नवाज की पाकिस्तान वापसी है, अगर वह पाकिस्तान के अगले प्रधानमंत्री बनते हैं, तो भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव कम हो सकता है। नवाज ने संकेत दिया है कि वह पड़ोसियों के साथ शांति चाहते हैं और बदले की राजनीति से बचना चाहते हैं। नवाज उम्मीद करते हैं कि चुनाव कराने के लिए परिसीमन और जनगणना की प्रक्रिया समय पर पूरी हो जाएगी। नवाज शरीफ ने अपने परिवार के साथ किए गए दुर्व्यवहार के बारे में लोगों को बताया और अपने भ्रष्टाचारों पर पर्दा डालने के लिए इमरान सरकार के बदले की राजनीति का जिक्र किया। इस्लामाबाद स्थित विशेषज्ञ यह संभावना भी जताते हैं कि शरीफ बंधु भारत कार्ड भी खेल सकते हैं और इमरान खान को भारतीय एजेंट बता सकते हैं। उनका मानना है कि ऐसा लगता है कि सेना ने इमरान खान की पार्टी की जीत की किसी भी संभावना को कम करने के लिए नवाज शरीफ पर भरोसा करने का आखिरी विकल्प चुना है। अगले साल की शुरुआत में आम चुनाव होने वाले हैं, जिसका मतलब होगा कि पाकिस्तान में छद्म ही सही, लेकिन लोकतांत्रिक प्रक्रिया जारी रहेगी। इमरान खान के अमेरिका विरोधी और भारत विरोधी रुख को देखते हुए विशेषज्ञों का मानना है कि नवाज शरीफ थोड़े बेहतर साबित हो सकते हैं, पर हमें रुककर आगे की घटनाओं को देखना होगा।

कुलपति ने पांच दीए जलाकर दीपोत्सव की सफलता के लिए मनोकामना की

जय श्रीराम उद्घोष के साथ वालंटियर्स राम की पैड़ी के लिए हुए रवाना

❖ दीपोत्सव समिति के संयोजक की निगरानी में 51 घाटों पर पहुँचाएं गए दीए।

❖ विवि सातवें दीपोत्सव में छठवीं बार गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज कराने को तैयार।

संवाददाता

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन के सभागार में प्रातः कुलपति प्रो0 प्रतिभा गोयल ने प्रान्तीयकृत दीपोत्सव में विश्व कीर्तिमान बनाने के लिए प्रभु श्रीराम के चित्र के समक्ष पांच दीए जलाकर मनोकामना की। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मंशानुरूप दीपोत्सव को अलौकिक बनाने के लिए आवासीय परिसर, सम्बद्ध महाविद्यालयों, इण्टर कालेजों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के 25 हजार से अधिक वालंटियर्स लगाये गए है। इनकी मदद से 51 घाटों पर 24 लाख दीए प्रज्जवलित करेंगे। इसकी तैयारियों में गठित समितियां घाटों पर सक्रिय हो गई है। पिछला रिकार्ड तोड़ते हुए पुनः गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज करेंगे। दीपोत्सव की सफलता के लिए नोडल अधिकारी प्रो0 संत शरण मिश्र, कुलसचिव डॉ0 अंजनी कुमार मिश्र, वित्त अधिकारी पूर्णेन्दु शुक्ला, परीक्षा नियंत्रक उमानाथ, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल, मीडिया प्रभारी डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी सहित अन्य भी मनोकामना की। दूसरी ओर दीपोत्सव को तैयारियों को लेकर कुलपति के दिशा-निर्देशन में परिसर से प्रातः 10 बजे यातायात समिति के संयोजक प्रो0 अनूप कुमार, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र की देखरेख में बसों से वालंटियर्स को राम की पैड़ी के लिए रवाना किया गया। जय श्रीराम उद्घोष के साथ वालंटियर्स का दीपोत्सव के प्रति उत्साह देखते ही बन रहा है। करीब एक हजार वालंटियर्स एवं विवि के कर्मी राम की पैड़ी के घाटों पर स्टोर किए गए पांच-पांच सौ दीए के गत्ते घाटों पर रखवाने शुरू किए गए। वितरण एवं सामग्री समिति के संयोजक प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ला व प्रो0 गंगाराम मिश्र की निगरानी में घाटों पर दीए की सप्लाई प्रातः से ही शुरू कर दी गई। देर रात तक 51 घाटों पर 24 लाख दीए की सप्लाई पूरी हो जायेगी। दीपोत्सव नोडल अधिकारी प्रो0 संत शरण मिश्र ने बताया कि दीपोत्सव की भव्यता के लिए घाटों पर दीए के गत्ते पहुँचने शुरू हो गए है। 08 नवम्बर से प्रातः 10 बजे से वालंटियर्स द्वारा 24 लाख दीए दीपोत्सव मार्किंग स्थलों पर बिछाने का कार्य शुरू करेंगे, जो 09 नवम्बर चलेगा। 10 नवम्बर को दीपों की गणना की जायेगी। 11 नवम्बर को वालंटियर्स द्वारा दीपों में तेल डालने, बाती लगाने के साथ देर शाम प्रज्ज्वलित करेंगे। नोडल अधिकारी ने बताया कि दीपोत्सव तक वालंटियर्स के लिए विवि परिसर से बसे लगाई गई है जो प्रातः 8 बजे रवाना की जायेगी व शाम तय समय पर वापस आयेगी। सभी वालंटियर्स को आईकार्ड के साथ रहना अनिवार्य है। इन्हें टी-शर्ट व कैप वितरित कर दिया गया है। कुलपति द्वारा दीपोत्सव की गठित समितियों को दिशा-निर्देश प्रदान कर दिया गया है। सभी समितियां अपने कार्यदायित्वों का निवर्हन करते हुए वालंटियर्स की मदद से पुनः गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज करेंगे।

हर क्षेत्र में शोध की मांग बढ़ी: प्रो0 आरएन राय

❖ अविवि में शोध प्रविधि विषय पर आयोजित कार्यशाला सम्पन्न।

संवाददाता

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध एवं उद्यमिता विभाग में शोध प्रविधि विषय पर आयोजित एक सप्ताह के कार्यशाला का समापन हुआ। समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि पूर्व संकायाध्यक्ष प्रो0 आरएन राय ने छात्रों को बताया कि हर क्षेत्र में शोध की मांग बढ़ी है। परिणामों को प्राप्त करने के लिए शोध प्रविधि सहायक है। उन्होंने कहा कि शोध से छात्रों में व्यक्तित्व विकास होगा और रोजगार से जुड़ने कर संभावनाएं बनेगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. हिमांशु शेखर सिंह ने प्रतिभागियों को केस स्टडी की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे वास्तविक समस्या को अच्छी तरीकें से समझने के साथ नए आयाम दे सकते है। इसके साथ ही प्रो0 सिंह ने शोध प्रविधि के अन्य विन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम में डॉ0 राणा रोहित सिंह ने छात्र छात्राओं को इस तरह के कार्यशाला में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया और प्रश्नावली प्रविधि से किस प्रकार निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है। इस प्रविधि से अभिसिंचित किया। कार्यक्रम में प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा द्वारा अतिथियों का स्वागत करते हुए आयोजित हुए कार्यशाला का विवरण प्रस्तुत किया गया। इस दौरान प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को सहभागिता प्रमाण-पत्र वितरित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 राकेश कुमार ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 आशुतोष पांडेय द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ0 अनिता मिश्रा, डॉ0 प्रवीन राय, डॉ0 कविता श्रीवास्तव, योगेश दीक्षित, डॉ0 श्रीश अस्थाना, डॉ0 प्रियंका सिंह, डॉ0 रामजीत सिंह यादव, डॉ0 अंशुमान पाठक, डॉ0 रामजी सिंह, डॉ0 कापिल देव, डॉ0 आशीष पटेल, डॉ0 रविन्द्र भारद्वाज, डॉ0 विवेक उपाध्याय, डॉ0 सूरज सिंह, अंकित कुमार भट्ट, विवेक बालियान, सलिल कुमार, ऋषिका जायसवाल, श्रीकांत जोशी और अमित कुमार शुक्ला सहित अन्य मौजूद रहे।

एक नज़र

राष्ट्रीय विमुक्त घूमतु जनजाति महासभा

बदायूं। राष्ट्रीय विमुक्त जनजाति महासभा उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय नेतृत्व व प्रदेश नेतृत्व बांसुरी आशिक नायक प्रदेश प्रतिनिधि उत्तर प्रदेश की अनुशंसा के आधार पर विमुक्त घूमतु जनजाति महासभा उत्तर प्रदेश में श्रीमान शिवा नायक पुत्र श्री नन्हेंलाल को प्रदेश मीडिया प्रभारी पद पर मनोनीत किया जाता है आशा और पूर्ण विश्वास है कि आप अपने पद का निर्वहन पूर्ण गरिमा और कर्तव्य के साथ करेंगे। आपके उज्जवल भविष्य की शुभकामना की जाती है।

अपोलोमेडिक्स कैंसर सेंटर ने भारत की सबसे तेज़ और सबसे सटीक स्तन कैंसर की जांच की सुविधा शुरू की

लखनऊ। अपोलोमेडिक्स कैंसर सेंटर ने %भारत के सबसे तेज़ और सबसे सटीक स्तन कैंसर निदान कार्यक्रम% को शुरू करके एडवांस कैंसर ट्रीटमेंट के साथ अपनी स्वास्थ्य सेवाओं के मानदंडों को आगे बढ़ाना जारी रखा है। इस अग्रणी पहल का उद्देश्य स्तन कैंसर का शीघ्र और सटीक पता लगाने का प्रयास करना है, यह इस बात की पुष्टि करता है कि बेहतर उपचार और रोगियों के जीवन में सुधार के लिए कैंसर का शीघ्र पता लगाना कितना महत्वपूर्ण है। यह अभूतपूर्व पहल स्तन कैंसर प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और स्वास्थ्य सेवाओं के भविष्य में एक उम्मीद की एक किरण प्रदान करता है। अपोलोमेडिक्स कैंसर सेंटर द्वारा भारत मे पहली बार इस कार्यक्रम को शुरू करने पर गर्व है। यह भविष्य में अन्य अंगों के कैंसर के निदान के लिए मॉडल को दोहराने की क्षमता की नींव रखता है। अक्टूबर में स्तन कैंसर जागरूकता माह के साथ, अपोलोमेडिक्स कैंसर सेंटर इस कार्यक्रम को महिलाओं में स्तन कैंसर के समय पर निदान के लिए समर्पित कर रहा है। डॉ. मयंक सोमानी - एमडी और सीईओ - अपोलोमेडिक्स हॉस्पिटल्स लखनऊ ने कहा, ÷भारत के पहले, सबसे तेज़ और सबसे सटीक निदान कार्यक्रम का शुभारंभ कैंसर देखभाल को फिर से परिभाषित करने के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। हम मानते हैं कि स्तन कैंसर का समय से पता लगना ही सबसे महत्वपूर्ण है। हमारा लक्ष्य महिलाओं को समय पर और सटीक निदान प्रदान करते हुए शीघ्रता से आशा और उपचार प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के साथ, हम न केवल प्रतीक्षा समय को कम कर रहे हैं; हम रोगी देखभाल के मानदंडों को भी ऊंचा उठा रहे हैं।

वत्सला मिस व रचित बनें मिस्टर फ्रेशर

अभिवादन में भी दिखे अयोध्या की संस्कृति: प्रो. सिंह

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध एवं उद्यमिता विभाग के एमबीए तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया, जिसमें एमबीए प्रथम सेमेस्टर के रचित मिश्र मिस्टर व वत्सला सिंह मिस फ्रेशर चुनीं गईं। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने एकल व समूह नृत्य एवं गायन से दर्शकों का मनमोह लिया। विभागाध्यक्ष प्रो. हिमांशु शेखर सिंह ने कहाकि पेशेवर पढ़ाई के साथ-साथ संस्कारों के प्रति भी सजग होना आवश्यक है। बेहतर होगा कि जब एक-दूसरे का अभिवादन करें उनमें अयोध्या की सांस्कृतिक झलक भी दिखे। जिस प्रकार से मथुरा-वृंदावन में राधे-राधे, काशी जय भोले एवं अन्य तीर्थ स्थलों पर एक-दूसरे का अभिवादन किया जाता है, वैसे ही अयोध्या में राम-राम से एक-दूसरे का अभिवादन किया जाता है। कहा, जैसे प्रभु राम आदर्श के तौर पर प्रतिष्ठित हुए, वैसे ही विद्यार्थी भी भगवान से प्रेरणा लेकर समाज, नियोक्ता, परिवार और विवि के लिए आदर्श के तौर पर प्रतिष्ठित हों। उन्होंने बताया कि भगवान राम जिस प्रकार से समाज को जोड़ा, इसपर परिचर्चा का आयोजन किया जाएगा । कार्यक्रम में प्रो. शैलेंद्र वर्मा ने कहाकि अयोध्या में आने वाले समय में रोजगार और उद्यमिता के अनेक अवसर भी विकसित होंगे। ऐसे में अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजते हुए कुशल प्रबंधकों को भविष्य के लिए तैयार किया जाएगा। प्रो. राना रोहित सिंह ने कहाकि ऐसे आयोजनों से विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास होता है। डा. निमिष मिश्रा ने विभाग के विद्यार्थियों को दीपोत्सव की कार्ययोजना बताई। इस अवसर पर प्रो. आरएन राय, प्रो. अशोक शुक्ला, डा. महेंद्र पाल सिंह, डा. कपिलदेव चैरसिया, डा. राकेश कुमार, डा. प्रवीण राय, डा. अनुराग तिवारी, डा. अंशुमान पाठक, डा. रविंद्र भारद्वाज, डा. रामजीत सिंह यादव, डा. विवेक उपाध्याय, डा. रामजी सिंह, डा. संजीत पांडेय, डा. कविता श्रीवास्तव, डा. अनिता मिश्रा, डा. प्रियंका, जूलियस कुमार, सूरज सिंह आदि उपस्थित रहे।

गाँव के तालाब में 35 वर्षीय युवक का तैरता मिला शव

❖ थाना जरीफ नगर में संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत से क्षेत्र में सनसनी फैली।

❖ कल सुबह घर से शौच को कहकर गया था युवक।

❖ घर न लौटने पर दिनभर तलाश करने के बाद परिजनों ने थाने में दर्ज कराई थी गुमशुदगी

संवाददाता

जरीफनगर। आज सुबह राह चलते ग्रामीण ने तालाब में उतराता देख शव को थाना पुलिस को सूचना दी घटनास्थल पर पहुंची पुलिस जांच में जुटी शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजाढ़ू जरीफनगर थाना क्षेत्र के दियोहरा शेखपुर गांव का मामला है। मृतक अमरपाल (35) बर्ष पुत्र खमानीराम निवासी दियोहरा शेखपुर सोमवार की सुबह से गायब हो गया थाढ़ू परिजनो ने उसकी काफी तलाश की जब उसका कोई अतापता नही चला तो परिजनों ने थाना पुलिस को गुमशुदगी की तहरीर दी थीढ़ू मंगलवार की सुबह खेत पर पहुँचे किसान ने गाँव के नजदीक तलाब मे अमरपाल का शव देखा तो उसकी सूचना उसके परिजनो को दी घटना की सूचना थाना जरीफनगर पुलिस को दी तो सूचना पर पहुँचे थाना प्रभारी राकेश कुमार पुलिस बल के साथ घटना स्थल पर पहुँचे घटना की सूचना मिलते ही सीओ सहसवान भी घटना स्थल पर पहुँच कर घटना स्थल का निरीक्षण किया। घटना स्थल पर फॉरेन्सिक टीम भी पहुँची शव का पंचनामा भर शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

राज्य सरकार द्वारा बहुत ही अच्छे तरीके से बनाए जा रहे आयुष्मान कार्ड

संवाददाता

बदायूं थाना मुजरिया। आपको बता दें कि आज मंगलवार को जनपद बदायूं के ग्राम पंचायत ज्यौरा पारवाला में उचित दर विक्रेता हेमंत गुप्ता के यहां पर पूरी टीम द्वारा आयुष्मान कार्ड बनाए जा रहे है लेकिन ग्राम पंचायत के कुछ लोग इसमें बाधा डाल रहे हैं गांव के साबिर अली के यहां पर केवल दो ही सदस्य मौजूद हैं बाकी के पांच सदस्य बाहर हैं और इरफान अहमद के परिवार में एक बेटी बैंक में भी जॉब करती है जो स्पष्ट रूप से राशन के लिए भी अपात्र है और इनके भी द्वारा आयुष्मान कार्ड नहीं बनवाया जा रहा है आयुष्मान कार्ड का विरोध किया जा रहा है और कहा जा रहा है कि सबसे ज्यादा आयुष्मान कार्ड को बनने के लिए कोठेदार हेमंत गुप्ता द्वारा प्रेरित किया जा रहा है इन लोगों के द्वारा गांव में कभी भी झगड़ा किया जा सकता है इस मौके पर कोटेदार हेमंत कुमार,पंचायत सहायक अंजु रानी,क्षत्र कौशल अली,आशा निर्वेश,सीमा,सोबती, छाह विनीता शर्मा आदि लोग

बुनकरों-किसानों संग सपा विधायक अतुल प्रधान ने उर्जा भवन पर डाला डेरा, शहर विधायक को बताया कबूतरबाज

मेरठ। समाजवादी पार्टी के विधायक अतुल प्रधान ने मंगलवार को बिजली बिल व बुनकरों की समस्याओं को लेकर ऊर्जा भवन पर अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू किया जो बुधवार को भी जारी रहा। मंगलवार को धरने में बोलते हुए अतुल प्रधान शहर विधायक को कबूतरबाज बताया। मेरठ सरधना विधायक अतुल प्रधान के नेतृत्व में मंगलवार को बुनकरों और किसानों ने जेल चुंगी स्थित ऊर्जा भवन पर शुरू किया गया अनिश्चितकालीन धरना बुधवार को भी जारी रहा। इससे पहले मंगलवार को शुरू हुए बुनकरों को फ्लैट रेट पर बिजली देने, किसानों के बिजली बिल माफ और छापे की कार्रवाई बंद कराने की मांग को लेकर धरने में काफी संख्या में बुनकर और किसान शामिल हुए।

दीए से बनाए गए राम मंदिर माडल का जिलाधिकारी ने किया शुभारंभ

संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या में राम की पैड़ी पर 6000 स्क्वायर फीट में बनाये जाने वाले राम मंदिर मॉडल का शुभारंभ जिलाधिकारी नितीश कुमार व संकायाअध्यक्ष कला एवं मानवकीय डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय प्रोश आशुतोष सिन्हा के कर कमलों द्वारा विजय पताका में रंग भरकर किया गया। प्रोशविनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि यह राम मंदिर मॉडल फाइन आर्ट डिपार्टमेंट डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के 150 बच्चों द्वारा 3ष्ठ इफेक्ट में निर्मित हो रहा है जिसमें फाइन आर्ट के शिक्षिकाएं डॉक्टर सरिता द्विवेदी,डॉक्टर रीमा सिंह, सरिता सिंह,आशीष प्रजापति जी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं इस राम मंदिर में भगवान श्री राम को विराजमान दर्शाया जाएगा जो की विजय मुद्रा में होंगे जो की 500 वर्षों के संघर्ष के बाद राम मंदिर निर्माण के विजय की गौरव गाथा का प्रतीक होगा इस राम मंदिर मॉडल को लगभग 108000 दीयो द्वारा पूर्ण किया जाएगा जो इस दीपोत्सव की भव्यता को बढ़ाएगा द्यइस अवसर पर प्रोश मृदुला मिश्रा, डॉ प्रिया कुमारी,अलका श्रीवास्तव, डॉ रचना श्रीवास्तव, वीरेंद्र, शिव ओम यादव, प्रज्ञा, सोनाली, शिवम यादव, विमल, काजल,आशीष,के साथ भारी मात्रा में छात्राएं मौजूद रहे।

2024 लोकसभा चुनाव में अपनी चुनौती पेश करने के लिए लोक दल ने चौधरी विजेंद्र सिंह को राष्ट्रीय महासचिव की जिम्मेदारी दी

संवाददाता

लखनऊ। आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव की लड़ाई को मजबूती से लड़ने के लिए चौधरी चरण सिंह के आदर्शो पर चलने वाली लोक दल पार्टी के अध्यक्ष सुनील सिंह ने चौधरी विजेंद्र सिंह को पार्टी का राष्ट्रीय महासचिव नियुक्त किया। इस मौके पर चौधरी विजेंद्र सिंह ने मीडिया से कहादेहात और किसान भारतीय राजनीति में 80त्न से अधिक मतदाताओं की सोच, समझ और आवश्यकता को महत्व दिलाने वाली पार्टी लोकदल में अस्तित्व बनाने के बाद, बहुत से राजनेताओं ने अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश की और उनकी राजनीतिक शैली का ही नतीजा है कि आज वह अपने पहचान के संकट से जूझ रहे हैं। दिग्गजों को जन्म देने वाली यह पार्टी एक बार फिर से जनता के बीच दो बैल और खेत जोतते किसान के चुनाव चिन्ह के साथ ही मजबूती के साथ राजनीति के मैदान में उतर आई है। और इस बार इस पार्टी का नेतृत्व पूरी तरह से भारत में ही पले बढ़े और अपनी विश्वसनीयता कायम करने वाले लोगों के हाथों में है यह लोग वंशवाद के आधार पर आगे नहीं बढ़ेंगे और अब लोक दल पूरी तरह से नगरों देहात और किसानो की पार्टी के रूप में राजनीतिक दंगल में जोर आजमाइश करेगी। इस मौके पर चौधरी विजेंद्र सिंह ने जोर देते हुए कहा पार्टी के संघटनात्मक ढांचे को मजबूत करने के साथ-साथ जिला स्तर ब्लॉक स्तर और मंडल स्तर पर रणनीतिक और सामाजिक भूमिका के लिए अच्छे युवाओं और कार्यकर्ताओं के साथ नेताओं को जोड़ने की जिम्मेदारी उनकी रहेगी वह पार्टी कार्यकारिणी के साथ सामाजिक हितों के लिए फैसला लेंगे। चौधरी चरण सिंह जी के लगाए गए लोकतंत्र के इस लोक दल रूपी वृक्ष को मजबूत करने के साथ-साथ पार्टी की जिम्मेदारी अगड़े पिछड़े और किसानों को उनका हक दिलाने की रहेगी उन्होंने इस मौके पर कहा उनकी नजर में पहले हम सब हिंदुस्तानी है इसके बाद हम चाहे जिस पहचान से भी जाने जाते हो जाट ब्राहमण बनिया हिंदू मुसलमान यह सब बातें व्यक्तिगत है

राष्टवाद और विकास प्राथमिक है

प्रेस को संबोधित करते हुए चौधरी विजेंद्र सिंह ने जोर देकर कहा आधी आबादी यानी महिलाओं के हक और उन्हें विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए पार्टी जी जान एक कर देगी बहनों माताओं को उनके हुकूक दिलाने की लड़ाई लड़ेगी वरिष्ठ नागरिकों को किसी भी प्रकार की दिक्कत ना हो इसका विशेष ध्यान रखेगी।

वेतन वृद्धि की मांग को लेकर डायल 112 की कॉल टेकर्स महिलाएं आंदोलन की राह पर

संवाददाता

लखनऊ। डायल 112 में कार्यरत कॉल टेकर्स महिला कर्मचारियों ने कल से ही कार्य बहिष्कार कर धरना प्रदर्शन कर रही हैं। पहले तो इन महिला कर्मचारियों ने डायल 112 मुख्यालय का घेराव किया। बात नहीं बनी तो सोमवार देर शाम सुल्तानपुर रोड को जाम कर दिया। पुलिस के अधिकारियों ने काफी मशक्कत के बाद रोड जाम हटवाया। लेकिन रात भर डायल एक सौ बारह मुख्यालय के सामने धरना प्रदर्शन व हंगामा चलता रहा। इसी क्रम में मंगलवार को इन महिला कर्मचारियों ने मुख्यमंत्री आवास का घेराव करने की कोशिश की। किंतु पहले से शतर्क पुलिस प्रशासन ने उन सभी को रास्ते में ही रोक लिया और सभी को बसों में बैठाकर धरना स्थल ईको गार्डन भेज दिया, जहां अफरा तफरी का माहौल है। महिला कर्मचारी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मिलने की जिद पर अड़ी हुई हैं। महिला कर्मचारियों ने बताया कि हमारा वेतन नहीं बढ़ाया जा रहा है। धरना स्थल ईको गार्डन पहुंचाई गई डायल 112 की महिला कर्मचारियों ने आरोप लगाया है कि पुलिस प्रशासन ने हम लोगों को मुख्यमंत्री जी से मिलने नहीं दिया। हम लोग शांतिपूर्ण ढंग से अपनी बात मुख्यमंत्री जी के समक्ष रखने जा रहे थे। महिला कर्मचारियों का आरोप है कि पुलिसकर्मियों द्वारा उनके साथ हाथापाई की गई है और और उन्हें जानवरों की तरह खींच खींच कर बसों में बैठा कर यहां भेजा गया है। वहीं पुलिस के उच्च अधिकारी इन महिला कर्मचारियों को समझाने में लगे हुए हैं।

अन्नी गांव में मिले युवक के शव की हत्या का खुलासा

संवाददाता

बदायूं। अन्नी गांव में मिले युवक के शव की हत्या का खुलासा हुआ प्रेम संबंधों में की गई थी हत्या। एसएसपी डॉक्टर ओपी सिंह ने पुलिस लाइन सभागार में पत्रकारों से वार्ता करते हुए बताया कि 22 अक्टूबर को 2023 को जनपद के थाना बिनावर में प्रेम सिंह की गुमशुदगी लिखी गई थी और 28 अक्टूबर को इनका शव अन्नी गांव थाना सिविल लाइन क्षेत्र में मिला था क्षत विक्षिप्त अवस्था में था। शव के मिलने के बाद हत्या का अभियोग पंजीकृत किया गया था और इसके अनावरण के लिए एसओजी और सिविल लाइंस की टीम एसपी सिटी और सीओसिटी के नेतृत्व में लगी। इन लोगों ने इन्वेस्टिगेशन करते हुए हत्या का खुलासा किया। इसमें जो यादराम पकड़ा गया है यह मेरा भाई था प्रेम सिंह के रूप में शव की शिनाओ की गई और और चार लोग अरेस्ट किया गया। प्रेम संबंधों के कारण यह हत्या की गई है यह अच्छा खुलासा है। हत्या का खुलासा करने वाली टीम को रुपये10000 ईनाम देने की घोषणा की गई है।

कोर्ट के आदेश पर चस्पा हुई नोटिस एवं बजी डुगडुगी

लखनऊ। उद्घोषणा करने के सम्बन्ध में- मु0अ0सं0 577/22 धारा419/420/467/468/471 /504/506/507 भादवि से सम्बन्धित अभियुक्त आशीष सोनी पुत्र कालीचरन निवासी हिमालयन कालोनी देवीखेडा थाना आशियाना जनपद लखनऊ के विरूद्ध माननीय न्यायालय श्रीमान सीजेएम लखनऊ द्वारा जारी 82 सीआरपीसी के आदेश के क्रम मे उपरोक्त अभियुक्त के पैतृक मकान पर आदेश की छायाप्रति चस्पा करते हुये डुगडुगी बजवाकर मुनादि करायी गयी।

नगर की टूटी सड़कों का निर्माण कार्य एक महीने के अंदर होगा पूर्ण

संवाददाता

कालपी(जालौन)। स्थानीय नगर में यातायात के लिए भीड़भाड़ वाली आधा दर्जन खराब सड़कों में से दो प्रमुख सड़को का निर्मा कार्य नगर पालिका परिषद के द्वारा पूरा करा दिया गया है। जबकि चार महत्वपूर्ण टूटी सड़कों का निर्माण कार्य एक महीने के अंदर करा दिया जायेगा। नगर पालिका परिषद अध्यक्ष अरविंद यादव ने बताया कि तहसील परिसर में सिविल कोर्ट से लेकर एसडीएम कार्यालय तक डामर युक्त सड़क का निर्माण का कार्य कर दिया गया है। इसी प्रकार प्रमुख धर्मस्थल पचपिण्डा देवी मंदिर की सड़क का निर्माण कार्य पालिका के द्वारा पूरा कराया गया है। उन्होंने बताया सबसे अधिक आवागमन वाली खराब सड़कों को प्राथमिकता से निर्माण कार्य कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि थोक सब्जी मंडी मार्ग, नगर पालिका टरननगंज चौराहे से लेकर बताशा मंडी तक तथा बताशा मंडी से लेकर खोवा मंडी तक डामर युक्त सड़क का निर्माण कार्य पालिका के द्वारा कराया जाएगा। क्योंकि मुख्य बाजार की प्रमुख सड़क मार्गो को अगले माग का बनवा दिया जाएगा। पालिका अध्यक्ष ने अवगत कराया है कि बीते वर्ष रेलवे स्टेशन के निर्माण तथा रेलवे लाइन के दोहरीकरण के कार्यो के दौरान भारी वाहनों की आवागमन की वजह से स्टेशन रोड जर्जर हो गई थी। इसी वजह से स्टेशन रोड के पुराने थाने से लेकर सब्जी मंडी बजरिया तक सड़क का निर्माण कार्य प्राथमिकता से कराया जाएगा। पालिका अध्यक्ष ने बताया कि सड़कों का निर्माण कार्य हो जाने के बाद कालपी नगर के सभी 25 वार्डों में चिन्हित दो-दो सड़कों का निर्माण कार्य नगर पालिका के द्वारा गतिशीलता से कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि नगर पालिका की योजना है कि कालपी नगर की सड़क चमकदार हो तथा वाहन फर्राटा भरते हुए निकल जाए।

कोतवाली एट पुलिस ने जुआ खेलते 03 जुआरियो को दबोचा

संवाददाता

एट जालौन। पुलिस अधीक्षक डॉ ईराज राजा के आदेश के अनुपालन में चलाए जा रहे हैं अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही अभियान के क्रम में एवं कोतवाली थाना अध्यक्ष कामता प्रसाद के कुशल नेतृत्व में थाना एट क्षेत्र के अंतर्गत आज ग्राम हरदोई गूजर के सैयद बाबा मजार की बगल में उप निरिक्षक प्रमोद कुमार यादव ने हमराह पुलिस बल के साथ अभियुक्त 1- विपिन कुमार सिंह पुत्र चंद्रभान सिंह उम्र करीब 32 वर्ष 2-- रविंद्र कुमार पुत्र रामप्रकाश अहिरवार उम्र करीब 38 वर्ष 3-- आशुतोष कुमार पुत्र छोटेलाल उम्र करीब 32 वर्ष निवासी हरदोई गूज र थाना एट जनपद जालौन को सार्वजनिक स्थान पर ताश के पत्तों से हार जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते हुए गिरफ्तार किया गया अभियुक्तों के कब्जे से मालफड 1390/ रूपये व जय मां तलाशी के दौरान ?200 /एवं 52 अदद ताश के पत्ते बरामद किए गए इस मौके से गुड्डू यादव पुत्र विजय यादव निवासी ग्राम हरदोई गूजर व रमेश जाटव एवं विपिन वर्मा (कोरी) ग्राम खरूसा थाना एट जनपद जालौन भागे हुए हैं थाना कोतवाली निरीक्षक कामता प्रसाद एट ने बताया कि भागे जुआरियो की तलाश की जा रही है शीघ्र ही गिरफ्तार किए जाएंगे उक्त जुआरियो का आपराधिक इतिहास -1 -- अभियुक्त रविंद्र कुमार के विरुद्ध मु अ सं 106 /22 धारा 13 जी एक्ट थाना एट , एवं अभियुक्त आशुतोष अहिरवार के विरुद्ध मु अ सं 145/16 धारा 147, 148,149 323, 324, 504 506 थाना एक्सीडेंट पर जालौन इस मौके पर प्रभारी निरीक्षक कामता प्रसाद थाना एट एवं उप निरीक्षक प्रमोद कुमार यादव व हेड कांस्टेबल 409 शैलेंद्र कुमार एवं कॉ विकास पटेल व चालक हितेंद्र सिंह थाना एट जनपद जालौन मौजूद रहे

ट्रैफिक पुलिस ने यातायात जागरूकता अभियान चलाया

❖ यातायात पुलिस की रडार में नाबालिक किशोर ।

❖ ई- रिक्शा एवं वाहन चलाने वालों को रडार में लिया जाएगा ।

संवाददाता

कालपी(जालौन)। शासन के द्वारा नवंबर 2023 में चलाए जा रहे यातायात माह के दौरान मंगलवार को ट्रैफिक पुलिस के द्वारा यातायात जागरूकता अभियान चलाया गया। इस कार्यक्रम के दौरान यातायात पुलिस के रडार में नाबालिक किशोर के द्वारा ई-रिक्शा एवं वाहन चलाने वालों को राडार में लिया गया। मालूम हो कि कालपी के सड़कों में ई रिक्शा, सीएनजी टैक्सी, आदि हल्के वाहनों का संचालन बहुत बढ़ गया है। कई स्थानों में टैक्सी तथा ई रिक्शा के द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने के मामले सुर्खियों में बने हुए है। कोतवाली के एडिशनल इंस्पेक्टर मोहम्मद अशरफ ने बताया कि यातायात माह के दौरान पुलिस के द्वारा ई-रिक्शा का संचालन पर जोर दिया जाएगा जिन-जिन स्थानों में नाबालिक किशोरों द्वारा ई रिक्शा या टैक्सी का संचालन करते हुए पाए जाएंगे तो उनका मोटर व्हीकल एक्ट के अंतर्गत चालान किया जाएगा। एडिशन इंस्पेक्टर के मुताबिक पुलिस अधीक्षक डॉ. ईरज राजा के निर्देशन में यातायात व्यवस्था को दुरुस्त रखा जाएगा। मंगलवार को यातायात पुलिस की टीम ने पेट्रोलिंग वाहन के माध्यम से कालपी की सड़कों में घूम-घूम कर यातायात नियमों की जानकारियां दी। वाहन चालकों को सीट बेल्ट का प्रयोग करने की नसीहत दी तथा दो पहिया वाहन चालकों को हेलमेट लगाकर गाड़ियां चलाने के लिए जागरूक किया।

एक नज़र

कोतवाली एट मे उपरीक्षक रामनिवास ने 10 लीटर अवैध कच्ची शराब पकड़ी

संवाददाता

एट जालौन। पुलिस अधीक्षक डॉ इराज राजा जालौन के आदेश के अनुपालन में चलाए जा रहे अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही अभियान के क्रम में एवं कोतवाली थाना प्रभारी निरीक्षक कामता प्रसाद के कुशल नेतृत्व में थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम कंकन खेरा के पास नहर बांबी पुलिया के पास आज उप निरीक्षक निरीक्षक रामनिवास द्वारा अभियुक्त प्रदीप पुत्र स्वर्गीय किशोरी निवासी कंकन खेरा थाना एट जनपद जालौन को एक प्लास्टिक की पिपिया में 10 लीटर कच्ची नाजायज शराब के साथ पकड़ा गया जिसके सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 186/2023 धारा 60 आबकारी अधिनियम पंजीकृत किया गया है ।

अज्ञात कारणों के चलते नव युवक ने लगाई फांसी

संवाददाता

एट जालौन। एट थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम अकोडी में युवक ने फांसी पर झूल कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली प्राप्त जानकारी के अनुसार मनीष कुमार कुशवाहा पुत्र स्वर्गीय रामकुमार निवासी बिनौरा हाल निवास अकोडी उम्र 18 वर्ष रात्रि को चचेरी मौसी के लड़के रवि कुशवाहा के साथ रात्रि को खाना खाकर सो गए सुबह सोच क्रिया मंजन करने के बाद 6-00 बजे किचन में रस्सी द्वारा छत के कुंडे से अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली इनका पैतृक गांव बिनौरा है पिताजी के गुजर जाने के बाद माताजी सहित दो भाई मामा लल्लू राम कुशवाहा के यहां रहने लगे थे मृतक मजदूरी का काम करता थथा सुबह जब लोगों ने देखा दंग रह गए आनंन फानंन मे घर के लोगों को एवं अड़ोस पड़ोस के लोगों को बुलाया सांसे चलती देख उरई जिला अस्पताल ले गए जहां पर डॉक्टरों ने मृत् घोषित कर दिया उरई कोतवाली सूचना देने पर पुलिस ने थाना प्रभारी एट कामता प्रसाद को सूचना दी यहां से कोतवाली एट पुलिस पंचनामा भरने के लिए उरई पहुंच गई है और उन्होंने बताया कि जांच की जाएगी कि किन कारणों के चलते मनीष कुमार ने फांसी लगाई परवारी जनों का रो रो कर बुरा हाल है युवा होने के साथ पड़ोस पड़ोस एवं गांव के लोग भी दुखी हैं।

तेज रफ्तार बाइक की टक्कर से किसान की मौत

एक बार फिर दिखा रफ्तार का कहर

संवाददाता

एट जालौन। एट थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम बर्ध मे रमेश चंद्र उर्फ कल्लू पुत्र हरकिशुन निवासी वर्ध मे डीजल लेकर खेत पर वापस लौटते समय रास्ते में तेज रफ्तार बाइक चालक ने किसान को जोरदार टक्कर मारी जिससे वह गंभीर रूप से घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा मौके पर पहुंची एंबुलेंस के द्वारा युवक को जिला अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने रमेश चंद्र उर्फ कल्लू को मृत्यु घोषित कर दिया बताते चलें रमेश चंद्र उर्फ कल्लू की मृत्यु होने की परिवार में सूचना मिलते ही कोहराम मच गया परिवारी जनों का रो रो कर बुरा हाल है।

अज्ञात कारणों के चलते घर में लगी आग, गृहस्थी का सारा सामान जलकर हुआ खाक

संवाददाता

उरई जालौन। माधोगढ़ थाना क्षेत्र के ग्राम सुल्तानपुरा में एक किसान के घर में सोमबार की रात को आग तब लग गई ज़ब पूरा परिवार नींद में सो रहा था आग के लगने के कारणों का पता नहीं चल सका हैं! लेकिन किसान के घर में रखा ग्रहस्थी का सारा सामान जलकर खाक हो गया हैं! बताते चलें कि विगत रात्रि लगभग रात 1बजे यह घटना तब घटित हुई। ज़ब गांव के किसान भूपेंद्र सिंह पुत्र महेन्द्र सिंह का पूरा परिवार गहरी नींद में सो रहा था तब पडोसी ने उठ रही आग की लपटों को देखकर आबाज देकर जगाया देखते ही देखते पलक झपकते ही पूरे घर में आग फैल गई। काफ़ी शोर शराबा सुनकर आस पड़ोस व अन्य ग्रामीण पहुंचे। सभी आग को बुझाने लग गए । लेकिन तब तक सारा सामान जलकर स्वाहा हो चुका था। बड़ी मुश्किल से आग पर काबू पाया जा सका। लेकिन घर में रखा सारा सामान साइकिल व खाने पीने का सारा सामान ,ग्रहस्थी जलकर राख हो गई ,गनीमत रही कि उसमें रखा सिलेंडर समय रहते निकाल लिया गया नहीं तो बड़ा हादसे से गुरेज नहीं किया जा सकता था !मामले की जानकारी होने पर राजस्व विभाग से लेखपाल उदयप्रकाश त्रिपाठी ने मौके पर पहुंचकर मौका मुआयना किया!

दीपावली बाद बाजार की सीसी सड़क का दूसरे चरण का कार्य प्रारंभ होगा

संवाददाता

कालपी(जालौन)। स्थानीय नगर के मुख्य बाजार टरननगंज में निर्मित कराई जा रही 4 करोड़ 75 लाख रुपए की लागत की सीसी सड़क का निर्माण कार्य दीपावली के बाद शुरू कराया जाएगा। कार्यों में विलंब होने से दुकानदारों तथा ग्राहकों को उड़ती धूल के कारण प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है। इस संबंध में लोक निर्माण विभाग खंड तृतीय के अवर अभियंता ब्रजेंद्र सिंह ने बताया कि शासन के द्वारा मुख्य बाजार की सड़क का निर्माण करने के लिए चार करोड़ 75 लाख रुपए का बजट आवंटित किया गया था। निर्माण कार्य करने का ठेका आर एन अग्रवाल आगरा की कंपनी को दिया गया था। उन्होंने बताया कि ठेकेदार कंपनी के द्वारा 1.65 किमी. लंबाई तथा 8 मी. चौड़ाई का सीसी सड़क का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। पानी से तरावत करने का सिलसिला प्रत्येक दिन चलाया जा रहा है। सड़क का निर्माण कार्य की हकीकत तथा निरीक्षण करने के लिए अधिशाषी अभियंता महेंद्र कुमार, सहायक अभियंता विजय गौड़ तथा अवर अभियंता के द्वारा निरंतर निगरानी रखी जा रही है। कार्यदाई संस्था तथा ठेकेदार कंपनी के द्वारा तय कार्यक्रम के तहत दीपावली के बाद सीसी सड़क का निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा इसके बाद सड़क के दोनों तरफ एक-एक मीटर चौड़ाई की इंटरलॉकिंग तथा फुटपाथ का निर्माण कराया जाएगा। निर्माण कार्य के रुक जाने के कारण सड़क में धूल के गुब्बार के कारण दुकानदारों, ग्राहकों तथा राहगीरों के लिए मुसीबत बना हुआ है। व्यापारियों ने सड़क के निर्माण को जल्द पूरा करने की मांग किया है।

श्रीमद् बाल्मीकि रामायण में पूर्णतया वर्जित, राजनीति का व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक चिंतन

संवाददाता

कालपी /जालौन। कालपी कॉलेज कालपी के संस्कृत विभाग एवं संस्कृत शोध केंद्र के प्रभारी तथा प्राचार्य प्रो0 सूर्य नारायण संयुक्त रूप से प्रेस वार्ता में बताया है कि महाविद्यालय के डॉ 0डी 0पी सिंह के के कुशल निर्देशन में श्रीमती प्रगति गुप्ता ने श्रीमद् वाल्मीकि रामायण में वर्जित राजनीति का व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक चिंतन विषय संस्कृत में प्रबंध बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया था जिसका मू धन्य विद्वोनो द्वारा मूल्यांकन किया गया । तदुपरान्त दिनांक 6.11.2023 को विश्वविद्यालय झांसी के गांधी सभागार में माननीय कुलदीप प्रो0 मुकेश पांडेय की अध्यक्षता में ओपन मौखिक परीक्षा हुई जिसमें प्रो मुन्ना तिवारी कला संकाय अध्यक्ष डॉ बी0बी त्रिपाठी निर्देशक संस्कृत शोध पीठ बु0वि,वि तथा बाह्य परीक्षक प्रो प्रदीप कुमार दिक्षित कानपुर विश्वविद्यालय एवं संयोजक प्रो ज्योति वर्मा शोध निदेशक डॉक्टर धर्मेंद्र पाल सिंह के पैनल द्वारा शोध प्रदर्शनी को विद्या वाचस्पति की उपाधि के लिए योग मिलकर सहर्ष डॉक्टर की पदवी की स्वीकृति प्रदान की है। आगामी दीक्षांत समारोह में महामहिम राज्यपाल कुलाधिपति उपाधि प्रमाण पत्र देंगे। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के डॉक्टर राधा रानी एवं डॉक्टर शैलेंद्र शेखर वरिष्ठ तथा डॉक्टर सोमचंद चौहान डॉक्टर सुधा गुप्ता आदि अध्यापकों ने हर्ष व्यक्त किया महाविद्यालय के प्रबंधक महोदय डॉक्टर अरुण कुमार मल्होत्रा द्वारा शोध प्रदर्शनी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए आशीर्वाद दिया।

ईश्वर की प्राप्ति के लिए तन और मन का शुद्ध होना अत्यंत जरूरी

जो व्यक्ति बुरे विचार और बुरी सोच को दरकिनार करके ईश्वर का स्मरण करता है ईश्वर भी उसकी सभी इच्छाएं पूरी करता है

संवाददाता

कदौरा/ जालौन। ईश्वर की प्राप्ति के लिए तन और मन का शुद्ध होना जरूरी है जो व्यक्ति बुरे विचार और बुरी सोच को दरकिनार करके ईश्वर का स्मरण करता है ईश्वर भी उसकी सभी इच्छाएं पूरी करता है उक्त बात प्रजा पिता ब्रम्हा कुमारी ईश्वरी विश्व विद्यालय आश्रम में दीपावली उत्सव एवम ग्रह प्रवेश के मौके पर दीदी उमा देवी ने भक्तो से कही और बड़ी संख्या में भक्तो ने उनकी बातो का स्मरण करते हुए प्रसाद ग्रहण किया । नगर के हमीरपुर रोड स्तिथ ब्रह्मा कुमारी आश्रम में दीपावली उत्सव का आयोजन किया गया इस मौके पर ब्रह्म कुमारी उमा दीदी ने आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए कहा की इंसान को अपने जीवन में मन की सफाई करते हुए अच्छे विचार रखने चाहिए जिससे देश में अच्छाई का साम्राज्य स्थापित हो सके उन्होंने कहा की परमात्मा एक है हम सबके अपने विचार से अनेक हो गए है कोई भगवान शिव को पूजता है तो कोई बजरंग बली को जब की सभी भगवान की सोच मानव कल्याण होती है इसलिए विचारो से ही भगवान मिलते है इसके बाद सभी भक्तो ने प्रसाद ग्रहण करते हुए अपना कुछ समय आश्रम को देने का प्रण लिया इस मौके पर शिवी प्रिंसी गुप्ता बड़े गुप्ता शिवानी राधेश्याम सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे ।

इनसेट

कदौरा । ब्रह्म कुमारी आश्रम में हुए दीपावली महोत्सव में आए हुए भक्त उस शिवलिंग के दर्शन के लिए व्याकुल दिखाई दिए जिसके साथ आश्रम की सेविका शिवी दीदी ने 17 अक्तूबर को शादी की थी आश्रम में उसी शिवलिंग के साथ आई शिवी दीदी ने बताया की वो बचपन से ही भगवान की आराध्य में खो गई थी जिस पर दुनिया की मोह माया को त्याग कर ईश्वर की प्राप्ति के लिए साधना करने लगी थी इसीलिए भगवान शिव को अपना पति मान लिया था और उन्ही के साथ शादी करके बाकी बचे जीवन को गुजार देंगी ।

आम आदमी पार्टी ने शहर में जगह जगह चलाया भिक्षाटन अभियान

संवाददाता

उरई (जालौन)। अडानी के लिए देश की सम्पत्ति को लूटने वाली मोदी सरकार के खिलाफ आप पंचायत प्रकोष्ठ यूथ विंग का दूसरा भिक्षाटन अभियान आज जालौन जिले के जिला मुख्यालय उरई शहर में सम्पन्न हुआ जिसमें आम जनता से सड़कों पर भिक्षा मंगाकर जो राशि इकट्ठा हुई चेक के माध्यम से नरेंद्र मोदी को भीख देने का कार्य किया गया । इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्रदेश उपाध्यक्ष यूथ विंग प्रखर बाजपेई, जिला महासचिब धीरेंद्र चौधरी, प्रदेश सचिव अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ मम्मू खान जी,जिला अध्यक्ष पंचायत प्रकोष्ठ गौरव चौधरी,जिला अध्यक्ष यूथ विंग उदय यादव व्यापार प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष हरिकिशन, महेंद्र प्रजापति, जिला उपाध्यक्ष यूथ विंग संजय राठौर, विक्रांत याद विक्रांत यादव जिला सचिव यूथ विंग ,नगर अध्यक्ष यूथ विंग शिवम सिंघानिया, अक्षय दुबे, विकास गौतम नगर महासचिव यूथ विंग, आकाश कुमार एवं समस्त कार्यकर्ता साथी मौजूद रहे।

क्षेत्राधिकारी डॉ देवेंद्र पचौरी की अध्यक्षता तथा प्रभारी निरीक्षक की मौजूदगी में मीट विक्रेताओं की बैठक संपन्न

दुकानदारों को नियमों का पालन करने के लिए नसीहत दी गई

संवाददाता

कालपी/जालौन। स्थानी कोतवाली के परिसर में प्रभारी निरीक्षक शिवकुमार सिंह राठौर की मौजूदगी तथा क्षेत्राधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार की अध्यक्षता में मीट विक्रेताओ की बैठक सम्पन्न हुई। इस दौरान दुकानदारों को नियमों का पालन करने के लिए नसीहत दी गई तथा गड़बड़ी करने वालों को सख्त कार्रवाई करने की चेतावनी दी। स्थानिक कोतवाली के मीटिंग हॉल में दोपहर 1 से बजे शुरू हुई मीटिंग में बोलते हुए क्षेत्राधिकारी ने कहा कि नियमों के विपरीत किसी को भी कार्य करने की अनुमति नहीं दी जायेगी। उन्होंने कहा कि प्रतिबंधित पशुओं के मीट को किसी भी सूरत में न तो कटने दिया जाएगा और न ही बिक्री करने दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रतिबंधित पशुओं के मीट का कारोबार करने वाले लोगों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जायेगी। मीटिंग में अवगत कराया गया कि सभी लोग खाद्य विभाग से लाइसेंस बनवा ले तथा मानक के अनुसार मीट की दुकानों में व्यवस्थाएं रखें जिसमें एसी दस्ताने तथा स्वच्छता की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि सभी लोग अपनी अपनी दुकानों में सफाई की पूरी व्यवस्थाएं रखें इसके अलावा वैद्य रूप से संचालित सेल्टर हाउस से संचालक से मीट खरीद कर विक्रय करें अनाधिकृत तरीके से पशुओं के काटने की अनुमति नहीं दी जाएगी। बैठक में एडिशनल इंस्पेक्टर मोहम्मद अशरफ, टरननगंज चौकी इंचार्ज चेतराम बुदेला, नगर पालिका के राजस्व निरीक्षक राम भवन से मौजूद रहे। इस मौके पर कपिल, बदरुद्दीन, यासीन कुरेशी, नसरुल्लह, भूरे कुरैशी, जाहिद कुरैशी आदि मीट मार्केट के दुकानदारों की मौजूदगी रही।

जिलाधिकारी जालौन की अध्यक्षता में जिला पोषण समिति कन्वजेन्स विभाग व आदर्श आंगनवाड़ी केंद्र की बैठक संपन्न

संवाददाता

उरई जालौन। जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने जिला पोषण समिति/कन्वर्जेन्स विभाग व आदर्श आंगनबाड़ी केन्द्र की समीक्षा बैठक कलैक्ट्रेट सभागार कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग की विभिन्न योजनाओं जैसे आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा पोषण ट्रैकर पर फीडिंग, एन0आर0सी0 में बच्चों का संदर्भन, आंगनबाड़ी केन्द्र भवन निर्माण, अधिकारियों द्वारा गोद लिये आंगनबाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण एवं तीव्र अतिकुपोषित (सैम) बच्चों को दुधारु गाय उपलब्ध कराने के विषय पर विस्तृत समीक्षा की। समीक्षा के दौरान उन्होंने समस्त बाल विकास परियोजना अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा केन्द्र के सभी बच्चों के वजन की निगरानी तथा ग्रह भ्रमण नियमित रुप से किये जाये तथा माह के अन्त तक शत-प्रतिशत फीडिंग पोषण ट्रैकर पर पूर्ण करायी जाये। यह भी सुनिश्चित किया जाये कि कोई भी आंगनबाड़ी कार्यकत्री फर्जी रुप से वजन व ग्रह भ्रमण की फीडिंग न करे। तीव्र अतिकुपोषित (सैम) श्रेणी के बच्चों की काउन्सलिंग कर चिकित्सक के परामर्शानुसार एन0आर0सी0 में भर्ती कराया जाये।

गड्ढे में गिरा युवक, सरिया हुआ शरीर के आर-पार मूकदर्शक बन वीडियो बनाते रहे लोग

संवाददाता

नई दिल्ली। पुलिसकर्मियों ने देखा कि सरिया युवक के जांघ से घुसकर पेट से निकल गया है। पुलिस ने मैकेनिक को मौके पर बुलाया। जिसने गैस कटर से सरिया को नीचे से काटकर अलग किया। उसके बाद पुलिस घायल युवक को वहां से बाहर निकालकर लोकनायक अस्पताल पहुंचे। शास्त्री पार्क इलाके में सोमवार रात दिल्ली-सहारनपुर हाईवे निर्माण में पिलर के लिए खोदे गए गड्ढे में एक युवक गिर गया। गड्ढे में रखा सरिया युवक के शरीर के आर-पार हो गया। घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर कैट्स एंबुलेंस और पुलिसकर्मी पहुंचे। किसी तरह सरिया को

काटकर युवक को गड्ढे से बाहर निकाला गया। युवक के शरीर में सरिया घुसा हुआ था। पुलिस ने उसे तुरंत लोकनायक अस्पताल में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर युवक के शरीर से सरिया निकाल दिया। डॉक्टरों के मुताबिक युवक की हालत स्थिर बनी हुई है। पुलिस ने लापरवाही का मामला दर्ज कर लिया है और मामले की छानबीन कर रही है। घायल युवक की पहचान सैयद कामेल (32) के रूप में हुई है। मूलतः बिहार का रहने वाले सैयद कामेल धरमपुरा गांधी नगर इलाके में रहता है। सोमवार देर शाम वह खरीदारी करने के बाद दोस्तों के साथ घर जा रहा था। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि सोमवार शाम 7.21 बजे पुलिस को सूचना मिली कि शास्त्री पार्क के पास सहारनपुर हाईवे निर्माण स्थल के पास पिलर के लिए बने एक गड्ढे में एक युवक गिर गया है। पिलर में लगा एक सरिया युवक के शरीर से आर-पार हो गया है। सूचना मिलते ही कैट्स एंबुलेंस और पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिसकर्मियों ने देखा कि सरिया युवक के जांघ से घुसकर पेट से निकल गया है। पुलिस ने मैकेनिक को मौके पर बुलाया। जिसने गैस कटर से सरिया को नीचे से काटकर अलग किया। उसके बाद पुलिस घायल युवक को वहां से बाहर निकालकर लोकनायक अस्पताल पहुंचे। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि इस लापरवाही के लिए कौन जिम्मेदार है। पुलिस अधिकारी का कहना है कि इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

निर्माण कार्य की वजह से हुए हादसे

- गांधीनगर में एफओबी से नीचे रखे सरिया पर गिरने से एक शख्स की मौत
- करतार नगर चौथे पुश्ते पर क्रेन ऑटो पर पलटा, हादसे में दो लोग हुए घायल
- शास्त्री पार्क के पास निर्माण में लगे ट्रक से बाइक टकराई, दो घायल

सुरक्षा के व्यापक इंतजाम नहीं होने से हादसा

जिस जगह पर हादसा हुआ है वहां सुरक्षा के इंतजाम नहीं थे। घटनास्थल के पास काम होने को लेकर कोई चेतावनी बोर्ड नहीं लगा हुआ है। स्थानीय लोगों के मुताबिक पिलर डालने के लिए फुटपाथ से लेकर बीच सड़क तक गड्ढा किया गया है। उसके बगल से ही सड़क पर यातायात चल रहा है। सड़क के किनारे पत्थर का बैरिकेड लगाया गया है, लेकिन उसकी ऊंचाई काफी कम है। आसपास के रहने वाले लोग बाजार जाने के लिए इसी रास्ते का इस्तेमाल करते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि रात में यहां पर रोशनी की उचित व्यवस्था नहीं होती है। इसकी वजह से लोगों को काफी सावधानी से जाना पड़ता है।

मूकदर्शक बन वीडियो बनाते रहे लोग

हादसा होने के दौरान पीड़ित सैयद कामेल के साथ उनके दोस्त असलीम भी मौजूद थे। उन्होंने बताया कि सोमवार देर शाम वह अन्य दोस्तों के साथ मछली खरीदने के लिए मछली बाजार गए थे। वहां से वापसी के दौरान घटनास्थल के पास अंधेरा था। पीड़ित को लगा कि आगे रास्ता है, जैसे ही उन्होंने वहां पैर रखा वह सीधे नीचे गड्ढे में गिर गए। नीचे पिलर बनाने के लिए सरिया लगा हुआ है। असलीम ने बताया कि गिरते ही उनके जांघ में एक सरिया घुस गया और वह पेट से बाहर निकल गया। हादसा होते ही वह चिल्लाने लगे। उनलोगों ने वहां मौजूद सुरक्षाकर्मियों और पुलिस को घटना की जानकारी दी। काफी देर होने पर उनलोगों ने ही एंबुलेंस को फोन किया। कुछ देर में ही काफी लोग वहां जमा हो गए और मदद करने के बजाए सभी ऊपर से अपने मोबाइल लेकर वीडियो बनाने लगे। करीब एक घंटे के बाद पुलिस ने मैकेनिक को वहां बुलाया। जिसने सरिया को गैस कटर से काटा। उसके बाद पीड़ित को लेकर वह अस्पताल पहुंचे। असलीम ने बताया कि गनीमत है कि उसके शरीर का कोई ऐसा हिस्सा क्षतिग्रस्त नहीं हुआ है।

एक नज़र

ओडीशा की ग्रुह् मंत्री को नहीं मालूम थाने में तोड़फोड़!

एजेंसी

भुबानेश्वर। गृह मंत्री को अम्बादोल पुलिस स्टेशन तोड़फोड के बारे में कोई खबर नहीं मिली. अम्बाडोला पुलिस स्टेशन हिंसा में पार्टी विधायकों की संलिप्तता के आरोपों के बाद गृह मंत्री तुसरकांति बेहरा ने अपने हाथ खड़े कर दिए। उसने पूछना बंद करने की कोशिश की। सबसे बुरी बात तो यह है कि राज्य के गृह मंत्री को यह खबर नहीं लगी कि राज्य के सुरक्षा बलों के कार्यालय पर इतना बड़ा हमला हो गया है.वहीं इस मामले में शामिल होने के सवाल के बाद खोड़ा विधायक सुशांत सिंह कैमरे के सामने सच कबूल कर चुके हैं.उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने समर्थकों से वहां शांति कायम नहीं रखने को कहा था. सोहेला क्षेत्र से पार्टी करने गए कुछ युवकों से पुलिस द्वारा नशीली दवाओं के कारोबार के आरोप में पूछताछ करने पर कुछ उपद्रवियों ने थाने में घुसकर तोड़फोड़ की। ऐसा लगता है कि ये बदमाश भाजमो विधायक सुशांत सिंह के समर्थक हैं. सबसे बड़ी बात ये है कि सुशांत पर समर्थकों को घटनास्थल पर पुलिस स्टेशन तोड़ने के लिए उकसाने का आरोप लगा है। हालांकि, इस घटना में 100 से अधिक लोगों के खिलाफ मामला दर्ज होने के बावजूद पुलिस अब तक विधायक को जांच क्षेत्र में नहीं लायी है. इसलिए बीजेपी ने सुशांत को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने की मांग की है. वहीं अब सुशांत के इस रिएक्शन की भी खूब चर्चा हो रही है. विधायकों को हिंसा करने का लाइसेंस मिल रहा है क्योंकि लोग वोट दे रहे हैं. क्या हिंसा भड़काना जनविरोधी नहीं है ।

एआई की क्लास में डॉक्टर सीखेंगे सर्जरी के गुर

माइक्रोस्कोपिक-एंडोस्कोपिक कौशल का एआई से होगा मूल्यांकन, प्रदर्शन के आधार पर मिलेंगे नंबर

एजेंसी

नई दिल्ली। एम्स में अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की क्लास लगेगी। इसमें डॉक्टर दिमाग की उलझी नसों को सुलझाने का गुर सीखेंगे। एम्स व आईआईटी दिल्ली की साझेदारी से तैयार हुए एआई-आधारित न्यूरोसर्जरी सिमुलेशन तय करेगा कि डॉक्टर का हाथ सर्जरी में कितना साफ है। संयुक्त प्रयास से तैयार हुए एआई तकनीक की मदद से माइक्रोस्कोपिक और एंडोस्कोपिक कौशल का स्वचालित मूल्यांकन किया जा सकेगा। इसकी मदद से न्यूरो सर्जन को सटीक रूप से मस्तिष्क की सर्जरी करना सिखाया जाएगा। दिमाग की सर्जरी सबसे जटिल होती है। इसमें छोटी से छोटी गलती मरीज की जान ले सकता है। इस तकनीकी गलतियों को सुधारने के लिए इस सिमुलेशन को विकसित किया गया है। इस तकनीक को न्यूरोसर्जरी विभाग में इकाई के प्रमुख प्रोफेसर आशीष सूरी और न्यूरो-इंजीनियरिंग लैब के संकाय प्रभारी प्रोफेसर प्रेम कुमार कालरा, प्रोफेसर सुबोध कुमार, सीएसई विभाग, आईआईटी दिल्ली से प्रोफेसर चेतन अरोड़ा ने विकसित किया है। इस तकनीक के बारे में प्रोफेसर आशीष सूरी ने बताया कि यह तकनीक न्यूरो सर्जन को सूक्ष्म-सुतुरिंग और माइक्रो-ड्रिलिंग जैसी जटिल सूक्ष्म तकनीक के बारे में भौतिक ज्ञान देगा। साथ ही किसी भी बिना किसी गलती के हाथ-आंख की मदद से होने वाले एंडोस्कोपिक कौशल को सुधारने के लिए प्रशिक्षित करेगा। साथ ही उन डॉक्टरों को अंक देकर उनकी सर्जरी तकनीक का मूल्यांकन भी करेगा। लैब में होने वाले इस प्रशिक्षण की मदद से लाइव होने वाले न्यूरो सर्जन के मूल्यांकन का बोझ कम होगा। आने वाले दिनों में मानकीकृत प्रशिक्षण और मूल्यांकन प्रोटोकॉल भी तैयार हो सकेगा।

प्रशिक्षण में आएगा बदलाव

एम्स निदेशक डॉ. एम श्रीनिवास ने कहा कि यह तकनीक भविष्य के सर्जनों को पढ़ाने के तरीके को बदल सकता है। इस परियोजना की मदद से एआई का इस्तेमाल करके सूक्ष्म और एंडोस्कोपिक न्यूरोसर्जरी प्रशिक्षण को बेहतर बनाया जा सकता है। इससे चिकित्सा शिक्षा और प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी के विकास के विकास और शोध को बढ़ावा मिलेगा।

तकनीक से सर्जरी हो रही आसान

एम्स के न्यूरो-इंजीनियरिंग लैब के वैज्ञानिक डॉ. रमनदीप सिंह ने कहा कि 3डी प्रिंटिंग और बॉयोमैकेनिकल गुण न्यूरोसर्जिकल सिमुलेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह उसी तरह के शारीरिक मॉडल के विकास को सक्षम करते हैं, जो मस्तिष्क के ऊतकों की भौतिक विशेषताओं को सटीक रूप से दोहराते हैं। इससे सर्जनों के कौशल को निखारने में मदद मिलती है। यह तकनीक आने वाले दिनों में काफी मददगार साबित होगी।

खेत में घास काट रहे व्यक्ति पर भालू ने हमला कर किया लहूलुहान

एजेंसी

मंडी। चौहारघाटी की मढ़ पंचायत के खबाण गांव में 33 वर्षीय व्यक्ति को भालू ने अचानक हमला कर दिया है। भालू के हमले में व्यक्ति बुरी तरह से जख्मी हो गया है, जिसे बरोट सीएचसी में प्राथमिक उपचार देने के बाद क्षेत्रीय अस्पताल मंडी रेफर कर दिया है। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले की चौहारघाटी की मढ़ पंचायत के खबाण गांव में 33 वर्षीय व्यक्ति को भालू ने अचानक हमला कर दिया है। भालू के हमले में व्यक्ति बुरी तरह से जख्मी हो गया है, जिसे बरोट सीएचसी में प्राथमिक उपचार देने के बाद क्षेत्रीय अस्पताल मंडी रेफर कर दिया है।

निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधाओं का अधिक से अधिक लाभ उठायें लोग : सिविल सर्जन डॉ. -जसप्रीत कौर

❖ लेफ्टिनेंट जनरल बिक्रम सिंह ने सब डिविजनल अस्पताल बलाचौर का औचक दौरा किया।

एजेंसी

नवांशहर/बलाचौर। सिविल सर्जन डॉ. जसप्रीत कौर आज ले. जनरल बिक्रम सिंह सब डिविजन अस्पताल, ब्लाचौर में आम जनता को प्रदान की जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं का निरीक्षण किया। इस मौके पर डिप्टी मेडिकल कमिश्नर डॉ. हरप्रीत सिंह और वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. कुलविंदर मान सहित सभी अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। सिविल सर्जन डॉ. जसप्रीत कौर ने अस्पताल के ओपीडी, जच्चा-बच्चा वार्ड, इमरजेंसी वार्ड और ओट सेंटर सहित विभिन्न वार्डों में लोगों को सरकारी स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए किए गए प्रबंधों की समीक्षा की। इस मौके पर उन्होंने अस्पताल में मेडिकल उपकरणों की भी जांच की सिविल सर्जन डॉ. जसप्रीत कौर ने अस्पताल के आला अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराने को प्राथमिकता दी जाए ताकि उन्हें किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े. इस अवसर पर वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. कुलविंदर मान ने सिविल सर्जन को आम लोगों को दी जा रही स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी दी और बताया कि अस्पताल में आम लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। दवाओं की कोई कमी नहीं है. सभी परीक्षण निःशुल्क किये जा रहे हैं। इस अवसर पर सिविल सर्जन ने लोगों से पंजाब सरकार की मुफ्त स्वास्थ्य सुविधाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की और कहा कि स्वास्थ्य विभाग उन्हें गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। इस अवसर पर डॉ. पियंका, डॉ. जतिंदरपाल सिंह, डॉ. मनदीप कौर, महामारी विज्ञान अधिकारी हरजिंदर सिंह, मुख्य फार्मेसी अधिकारी जोगिंदर दास और ब्लॉक एक्सटेंशन एजुकेटर निर्मल सिंह और स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

पेयजल संचित करने के उपाय सीख महिलाएं बनेंगी स्वाबलंबी

एजेंसी

चम्बा। चंबा शहर की महिलाओं को पेयजल को संचित करने के उपायों को सीखाकर स्वावलंबी बनाया जाएगा। इसी क्रम में मंगलवार को जल दीपावली अभियान का शुभारंभ किया गया। चंबा शहर की महिलाओं को पेयजल को संचित करने के उपायों को सीखाकर स्वावलंबी बनाया जाएगा। इसी क्रम में मंगलवार को जल दिवाली प्रकल्प का आयोजन किया गया। ये महिलाएं जड़ेरा गुलयानी प्राकृतिक जलस्रोत में पानी को साफ करने के ट्रीटमेंट प्लांट का भ्रमण करेंगी। साथ ही पानी को साफ करने के उपायों के बारे में भी जानेंगी। उपायुक्त चंबा अपूर्व देवगन, नगर परिषद अध्यक्ष नीलम नैयर, कार्यवाहक कार्यकारी अधिकारी संदीप कुमार ने महिला मंडल समूह की 30 महिलाओं के समूह के वाहन को हरी झंडी देकर रवाना किया। नगर परिषद चंबा राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, अटल मिशन फॉर रिजेनरेशन, अर्बन ट्रांसफार्मेशन मिशन के साथ जल दिवाली के रूप में महिलाओं के लिए पानी-पानी के लिए महिलाएं प्रकल्प का शुभारंभ किया गया है। इस प्रकल्प की पूर्ति हेतु महिलाओं को वाटर ट्रीटमेंट प्लांट जड़ेरा में ले जाकर जल संचयन और जल संवर्द्धन के माध्यम से आर्थिक स्वावलंबी बनाना है, साथ ही अच्छे जल संवर्धन के लिए समर्थता बढ़ाना है। इस मौके पर एसडीओ मदन कुमार राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन की मैनेजर रूचि महाजन श्याम बैरी और पूरी टीम मौजूद रही।

हिमाचल में अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए 1,600 करोड़ रुपये देगा विश्व बैंक

एजेंसी

शिमला। विश्व बैंक की तरफ से दी जाने वाली इस ऋण राशि से राज्य की बिजली आपूर्ति में अक्षय ऊर्जा स्रोतों से 10,000 मेगावाट अतिरिक्त उत्पादन लक्ष्य रखा गया है। भारत सरकार, हिमाचल प्रदेश सरकार और विश्व बैंक ने मंगलवार को राज्य में अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए 1,600 करोड़ (200 मिलियन डॉलर) की परियोजनाओं पर हस्ताक्षर किए। विश्व बैंक की तरफ से दी जाने वाली इस ऋण राशि से राज्य की बिजली आपूर्ति में अक्षय ऊर्जा स्रोतों से 10,000 मेगावाट अतिरिक्त उत्पादन लक्ष्य रखा गया है। ऋण राशि से प्रदेश में बिजली नेटवर्क को मजबूती मिलेगी। 150 मेगावाट की सौर ऊर्जा क्षमता भी बढ़ेगी। अगस्त 2022 को विश्व बैंक की टीम ने राज्य सचिवालय में हुई बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूर किया था। हिमाचल प्रदेश के लिए 100 फीसदी ऊर्जा अक्षय एवं हरित ऊर्जा स्रोतों से हासिल कर 2030 तक इसे हरित प्रदेश बनाने का लक्ष्य रखा गया है। फिलहाल यहां 80 फीसदी ऊर्जा पूर्ति जलविद्युत परियोजनाओं से हो रही है। विश्व बैंक के अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (आईबीआरडी) की तरफ से दिए जाने वाले इस ऋण की परिपक्वता अवधि 14.5 वर्ष होगी, जिसमें 4.5 वर्ष की छूट अवधि शामिल है। इस ऋण सहायता से राज्य में 150 मेगावाट की सौर ऊर्जा की क्षमता बढ़ाई जाएगी, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में प्रति वर्ष 1,90,000 मीट्रिक टन से अधिक की कमी होगी।परियोजनाओं पर हस्ताक्षर के बाद भारत के लिए विश्व बैंक के निदेशक अगस्ट तानो कुआमे ने कहा कि जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा खपत के स्थान पर हरित ऊर्जा के इस्तेमाल से स्थानीय आर्थिक गतिविधियों में तेजी आएगी। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश अन्य राज्यों को अतिरिक्त पनबिजली को बेचने में सक्षम बनेगा। यह कार्यक्रम अक्षय ऊर्जा में नए निवेश जुटाने के लिए भारतीय बिजली बाजार को नया रास्ता दिखाएगा। पांच वर्ष की इस परियोजना के लिए वर्ल्ड बैंक 1,600 करोड़ और प्रदेश सरकार 400 करोड़ रुपये खर्च करेगी। इस प्रोग्राम के तहत पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन और बिजली बोर्ड पर बिजली नेटवर्क की मजबूती का जिम्मा रहेगा। प्रदेश में 150 मेगावाट सौर ऊर्जा का उत्पादन पावर कारपोरेशन और हिम ऊर्जा के माध्यम से किया जाएगा।

ओडीशा की ग्रुह् मंत्री को नहीं मालूम थाने में तोड़फोड़ !

एजेंसी

भुबानेश्वर। गृह मंत्री को अम्बादोल पुलिस स्टेशन तोड़फोड के बारे में कोई खबर नहीं मिली. अम्बाडोला पुलिस स्टेशन हिंसा में पार्टी विधायकों की संलिप्तता के आरोपों के बाद गृह मंत्री तुसरकांति बेहरा ने अपने हाथ खड़े कर दिए। उसने पूछना बंद करने की कोशिश की। सबसे बुरी बात तो यह है कि राज्य के गृह मंत्री को यह खबर नहीं लगी कि राज्य के सुरक्षा बलों के कार्यालय पर इतना बड़ा हमला हो गया है.वहीं इस मामले में शामिल होने के सवाल के बाद खोड़ा विधायक सुशांत सिंह कैमरे के सामने सच कबूल कर चुके हैं.उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने समर्थकों से वहां शांति कायम नहीं रखने को कहा था. सोहेला क्षेत्र से पार्टी करने गए कुछ युवकों से पुलिस द्वारा नशीली दवाओं के कारोबार के आरोप में पूछताछ करने पर कुछ उपद्रवियों ने थाने में घुसकर तोड़फोड़ की। ऐसा लगता है कि ये बदमाश भाजमो विधायक सुशांत सिंह के समर्थक हैं. सबसे बड़ी बात ये है कि सुशांत पर समर्थकों को घटनास्थल पर पुलिस स्टेशन तोड़ने के लिए उकसाने का आरोप लगा है। हालांकि, इस घटना में 100 से अधिक लोगों के खिलाफ मामला दर्ज होने के बावजूद पुलिस अब तक विधायक को जांच क्षेत्र में नहीं लायी है. इसलिए बीजेपी ने सुशांत को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने की मांग की है. वहीं अब सुशांत के इस रिएक्शन की भी खूब चर्चा हो रही है. विधायकों को हिंसा करने का लाइसेंस मिल रहा है क्योंकि लोग वोट दे रहे हैं. क्या हिंसा भड़काना जनविरोधी नहीं है ।

इंदिरापुरम में बैंक कर्मचारी से साढ़े नौ लाख की लूट, कैश जमा करने बैंक गए थे केसियार और सेल्स सहायक

एजेंसी

गाजियाबाद। सेल्स सहायक दीपक ने बतया कि अजब के पीछा करने पर उन्होंने भी लुटेरों का पीछा किया था। दोनों ने हेलमेट पहने हुए थे। वह बाइक का नंबर नहीं नोट कर पाए। बैंक के आसपास पुलिस नहीं थी। गाजियाबाद के इंदिरापुरम में लूट की वारदात से पूरे इलाके में सनसनी मच गई। पेट्रोल पंप के केसियर अजब सिंह ने बताया कि वह हर दिन कि तरह मंगल चौक स्थित एसबीआई शाखा में मंगलावर दोपहर 12 बजे अपने सेल्स सहायक दीपक कुमार के साथ बाइक से केश जमा करने गए थे। अजब सिंह बैग में रखे 9,56,850 रुपये गोदी में लेकर बाइक पर पीछे बैठे थे। शाखा के बाहर बाइक रुकते ही आपचे बाइक सवार दो लोग आए और अजब के हाथ से बैग झपटकर कर ले गए। अजब ने चिल्लाते हुए बाइक सवारों का पीछा करना शुरू किया। दीपक भी लुटेरों के पीछे 200 मीटर तक भागे, भीड़ होने के कारण कुछ दूरी तक हेलमेट को देखकर पीछा किया, लेकिन दोनों तेजी से एनएच की ओर निकल गए।

शनिवार को 20 और सोमवार को किया 11 लाख कैश जमा

पेट्रोल पंप पर 10 साल से काम कर रहे मूल रूप से मेरठ और वर्तमान में ग्रेटर नोएडा में रहने केसियर अजब सिंह ने बताया कि वही हर दिन कैश जमा कराने जाते हैं। पेट्रोल पंप से शाखा करीब आधा किलोमीटर दूर है। वह ही कैश जमा कराने जाते हैं। शनिवार को 20 लाख, सोमवार को 11 लाख व मंगलावर को 9.56 लाख रुपये जमा कराने पहुंचे थे।

दोनों ने पहन रखे थे हेलमेट, नहीं नोट कर पाए बाइक नंबर

सेल्स सहायक दीपक ने बतया कि अजब के पीछा करने पर उन्होंने भी लुटेरों का पीछा किया था। दोनों ने हेलमेट पहने हुए थे। वह बाइक का नंबर नहीं नोट कर पाए। बैंक के आसपास पुलिस नहीं थी। 112 पर सूचना देने के लिए नंबर डायल किया लेकिन नहीं मिला। घटना होने पर भीड़ जमा हुई और इस बीच पुलिस कर्मी पहुंचे। उन्होंने पेट्रोल पंप मैनेजर को सूचना दी और पंप से तत्काल मालिक विनीत यादव को जानकारी दी गई। पुलिस कमिशनर खुद पहुंचे घटनास्थल, सड़क पर अधिकारियों के कसे पेंच पुलिस कमिशनर अजय मिश्रा लूट की जानकारी होने पर खुद घटना स्थल पहुंचे। पेट्रोल पंप केसियर, सेलस साहयक, पंप मालिक, 22 कर्मियों से जानकारी जुटाई। घटना को लेकर अधिकारियों के पेंच कसे।

अनावरण के लिए आठ टीम गठित

डीसीपी ट्रांस हिण्डोन शुभम पटेल ने बताया कि लूट कि घटना के अनावरण के लिए आठ टीमों का गठन किया गया है। सीसीटीवी से लुटेरों कि पहचान कर जल्द घटना का खुलसा किया जाएगा।

जाली हस्ताक्षर कर लाखों की लगाई चपत

एजेंसी

ऊना। एक फाइनेंस कंपनी के प्रबंधक की ओर से आठ महिलाओं के जाली हस्ताक्षर कर लोन लेने का मामला प्रकाश में आया है। शातिर ने महिलाओं को 3.87 लाख रुपये की चपत लगाई है। पुलिस ने आरोपी रहीश कुमार (31), निवासी सहारनपुर, उत्तर प्रदेश को चंडीगढ़ से गिरफ्तार कर नौ अक्तूबर कर पुलिस रिमांड पर लिया है। जानकारी के अनुसार रहीश कुमार ऊना में स्थित एक फाइनेंस कंपनी में बतौर मैनेजर तैनात है। उनकी कंपनी में आठ महिलाओं ने ऋण लेने के लिए आवेदन किया था। उक्त व्यक्ति ने आठों महिलाओं से आधार कार्ड सहित अन्य दस्तावेज ले लिए और उनके हस्ताक्षर भी करवा लिए। इसके बाद जब महिलाएं उनके पास ऋण के बारे में पूछने आई तो उसने उनके आवेदन रद्द होने की बात कही और खुद उनके हस्ताक्षर कर ऋण ले लिया। इससे महिलाओं के खाते में ऋण का पैसा जमा हो गया। जब उक्त महिलाओं ने उक्त मुद्दा उठाया तो कंपनी द्वारा ऑडिट करवाया गया, इसमें मैनेजर की ओर से धोखाधड़ी से ऋण लेने की बात सामने आई है। उधर, पुलिस अधीक्षक अर्जित सेन ठाकुर ने बताया कि आरोपी को रिमांड पर लेकर पूछताछ की जा रही है।

स्टोक्स के विश्व कप में पहले शतक से इंग्लैंड जीता

चैंपियंस ट्रॉफी की उम्मीदें कायम, नीदरलैंड बाहर

एजेंसी

पुणे। पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में बुधवार (आठ नवंबर) को बेन स्टोक्स ने क्रिस वोक्स (51) के साथ सातवें विकेट के लिए 81 गेंद में 129 रन की साझेदारी की। 340 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए नीदरलैंड की पारी 37.2 ओवर में 179 रन पर सिमट गई।

बेन स्टोक्स के विश्वकप में पहले शतक की बदौलत इंग्लैंड ने नीदरलैंड को 160 रन से हराकर 2025 की चैंपियंस ट्रॉफी में खेलने की उम्मीदें कायम रखी हैं। स्टोक्स ने 84 गेंद में छह चौकों और छह छक्कों की मदद से 108 रन की पारी खेली और इंग्लैंड को नौ विकेट पर 339 के योग पर पहुंचाया। इस विश्वकप में दूसरी बार इंग्लैंड ने तीन सौ से अधिक रन बनाए। इससे पहले उसने बांग्लादेश के खिलाफ नौ विकेट पर 364 रन बनाए थे। पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में बुधवार (आठ नवंबर) को बेन स्टोक्स ने क्रिस वोक्स (51) के साथ सातवें विकेट के लिए 81 गेंद में 129 रन की साझेदारी की। 340 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए नीदरलैंड की पारी 37.2 ओवर में 179 रन पर सिमट गई।

नीदरलैंड नहीं दे पाया जवाब

नीदरलैंड की शुरूआत अच्छी नहीं रही। उसके 13 रन पर शुरुआती दो विकेट गिर गए। 2011 के विश्वकप में इंग्लैंड के खिलाफ 29 रन बनाने वाले वेस्ले बर्रेसी 37 रन बनाकर संघर्ष किया। बीच के ओवरों में साइब्रांड ने 33 और स्कॉट एडवर्ड्स ने 38 रन की पारियां खेलीं। नाबाद 41 रन बनाने वाले तेजा निदामानुरु को अन्य बल्लेबाजों का साथ नहीं मिला। नीदरलैंड के अंतिम 5 विकेट पर 16 रन पर गिर गए। आदिल रशीद और मोइन अली ने तीन-तीन विकेट लिए।

मलान ने खेली 74 गेंद में 87 रन की पारी

जोस बटलर ने लगातार छठी बार टॉस जीता और इस बार पहले बल्लेबाजी का फैसला लिया। डेविड मलान और जॉनी बेयरस्टो (15) ने तेज 48 रन जोड़े। बेयरस्टो के आउट होने के बाद मलान ने आक्रामक बल्लेबाजी जारी रखी। उन्होंने जो रूट के साथ 80 गेंद में 85 रन की साझेदारी की। मलान ने इस दौरान वनडे में अपना सातवां अर्धशतक लगाया। दोनों की साझेदारी के दौरान इंग्लैंड विशाल स्कोर की ओर बढ़ता दिखाई दे रहा था, लेकिन यहां 35 गेंद में 28 रन बनाने वाले जो रूट ने रिवर्स हिट लगाने का प्रयास किया और गेंद उनके पैरों के बीच से निकलकर स्टंप से लग गई। 10 गेंद बाद मलान भी दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से रनआउट हो गए। मलान ने 74 गेंद में 10 चौकों और दो छक्कों की मदद से 84 रन की पारी खेली।

रूट के आउट होने के बाद 59 रन पर गिरे 5 विकेट

रूट के आउट होने से पहले इंग्लैंड का स्कोर एक विकेट पर 133 रन था, लेकिन अगले 15 ओवर में उसने 59 रन पर पांच विकेट खो दिए। 35.2 ओवर में इंग्लैंड का स्कोर छह विकेट पर 192 रन था। आउट होने वाले कप्तान बटलर भी थे। वह सिर्फ 5 रन बना पाए। यहां से स्टोक्स को वोक्स का साथ मिला। पहले उन्होंने 58 गेंद में अपना लगातार दूसरा अर्धशतक पूरा किया। इसके बाद उन्होंने तगड़े प्रहार शुरू किए। अगली 20 गेंदों पर उन्होंने अपना शतक पूरा कर लिया। 73 गेंद में दोनों बल्लेबाजों ने अपनी शतकीय साझेदारी पूरी कर इंग्लैंड को तीन सौ के पार कराया। यह उनका वनडे में पांचवां शतक रहा। वहीं वोक्स ने 45 गेंद में पांच चौकों और एक छक्के की मदद से 51 रन की पारी खेली। अंतिम 10 ओवर में इंग्लैंड ने 124 रन बनाए। बास डि लीडे ने 74 रन देकर तीन विकेट लिए।

न्यूजीलैंड-श्रीलंका मैच पर बारिश का साया पाक को हो सकता है फायदा

बंगलूरू। विश्व कप में लीग राउंड के मैच अब समाप्त होने वाले हैं। 45 में से 40 मुकाबले हो चुके हैं और पांच मैच बाकी हैं। विश्व कप का रोमांच अपने चरम पर है और सेमीफाइनल के लिए चार में से तीन टीमें तय हो चुकी हैं। भारत, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया पहले ही क्वालीफाई कर चुकी हैं। इंग्लैंड, श्रीलंका, नीदरलैंड और बांग्लादेश की टीमें इस दौड़ से बाहर चुकी हैं। अब एक जगह के लिए तीन टीमें दावेदार हैं। न्यूजीलैंड, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच टक्कर है। पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान के आठ-आठ मैचों में आठ-आठ अंक हैं। नेट रनरेट के आधार पर न्यूजीलैंड (+0.398) आगे है। उसके बाद पाकिस्तान (+0.036) और अफगानिस्तान (-0.338) है। न्यूजीलैंड का आखिरी मैच गुरुवार को बंगलूरू में श्रीलंका के खिलाफ है। पाकिस्तान शनिवार को कोलकाता में इंग्लैंड के खिलाफ और अफगानिस्तान शुक्रवार को अहमदाबाद में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेलेगा।

सेमीफाइनल की तीन टीमें तय, द. अफ्रीका का ऑस्ट्रेलिया से होगा सामना

भारत से भिड़ने के लिए अब तीन टीमें दावेदार

एजेंसी

मुंबई। विश्व कप 2023 में शीर्ष तीन टीमें तय हो चुकी हैं। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बाद ऑस्ट्रेलिया ने मंगलवार को अफगानिस्तान को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। भारत का शीर्ष पर रहकर लीग राउंड को खत्म करना तय माना जा रहा है। वहीं, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरे और तीसरे स्थान के लिए जंग होगी। हालांकि, दूसरे या तीसरे स्थान पर जो भी टीम रहे, सेमीफाइनल मुकाबला इन दोनों के बीच खेला जाना तय है।

प्लेइंग कंडीशंस के मुताबिक, दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम तीसरे स्थान की टीम से और पहले स्थान पर रहने वाली टीम चौथे स्थान पर रहने वाली टीम से भिड़ेगी। हालांकि, चौथी टीम अब तक तय नहीं हो सकी है। चौथे स्थान के लिए अब न्यूजीलैंड, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच जंग है। तीनों ही टीमों के आठ-आठ अंक हैं। तीनों ही टीमों को आखिरी लीग मैच खेलना है। न्यूजीलैंड का सामना श्रीलंका से, पाकिस्तान का सामना इंग्लैंड से और अफगानिस्तान को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेलना है। तीनों ही टीमें अगर जीतने में कामयाब रहती हैं तो नेट रन रेट का खेल होगा। फिलहाल न्यूजीलैंड का नेट रन रेट +0.398 है, जबकि पाकिस्तान का नेट रन रेट +0.036 है। अफगानिस्तान का नेट रन रेट -0.338 है।

1. न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड का लीग राउंड का आखिरी मैच श्रीलंका के खिलाफ है। श्रीलंकाई टीम खराब फॉर्म में है और कीवियों को इस मैच को जीतने के लिए पसंदीदा माना जा रहा है। न्यूजीलैंड ने पिछले चार मैच गंवाए हैं और इसी का उन्हें नुकसान उठाना पड़ा है। अगर न्यूजीलैंड की टीम श्रीलंका को हरा देती है और पाकिस्तान और अफगानिस्तान अपने-अपने आखिरी मैच हार जाएं या ये मैच बारिश से धुल जाएं तो कीवी टीम सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई कर जाएगी और भारत से अंतिम चार में भिड़ेगी। बाकी दोनों की तुलना में कीवियों का नेट रन रेट भी बेहतर है। अगर तीनों ही टीमें जीतती हैं तो फिर नेट रन रेट का खेल आएगा। ऐसे में बेहतर नेट रन रेट वाली टीम क्वालिफाई करेगी। श्रीलंका के खिलाफ एक बड़ी जीत भी उनकी राह आसान कर देगी, क्योंकि बाकी दोनों टीमों को फिर न्यूजीलैंड के नेट रन रेट को पीछे छोड़ने के लिए न्यूजीलैंड से भी बेहतर अंतर से जीत हासिल करनी होगी। न्यूजीलैंड और श्रीलंका के बीच मैच नौ नवंबर को बंगलूरू के चिन्नास्वामी स्टेडियम में है। हालांकि, बंगलूरू का मौसम कीवी फैंस के लिए परेशानी का सबब होगा। एक्यूवेदर की रिपोर्ट के मुताबिक, गुरुवार नौ नवंबर को वहां 90 प्रतिशत बारिश की संभावना है। अगर मैच नहीं होता है तो यह कीवी फैंस के लिए बुरी खबर होगी।

2. पाकिस्तान

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हार के बाद सभी ने पाकिस्तान को विश्व कप सेमीफाइनल में पहुंचने की दौड़ से बाहर कर दिया था। हालांकि, एक बार फिर %कुदरत का निजाम% उन पर मेहरबान हुआ और वह सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए पसंदीदा माने जा रहे हैं। श्रीलंका अगर न्यूजीलैंड को हरा देता या ये मैच बारिश से धुल जाता है, साथ ही दक्षिण अफ्रीका अफगानिस्तान को हरा देता है या ये मैच भी बारिश से धुल जाता है और पाकिस्तान इंग्लैंड को हराने में कामयाब रहता है तो बाबर आजम एंड कंपनी आसानी से सेमीफाइनल में पहुंच जाएगी।

न्यूजीलैंड के जीतने पर नेट रन रेट का खेल आएगा और पाकिस्तान को अपना नेट रन रेट कीवियों से बेहतर करना होगा। पाकिस्तान के लिए एक तरह से इक्वेशन साफ होगा क्योंकि उन्हें न्यूजीलैंड-श्रीलंका मैच के बाद खेलना है। ऐसे में कितने ओवर, कितने विकेट या कितने रन से उन्हें जीतना है, यह बात साफ होगी। जिस तरह की टीम पाकिस्तान है और जिस तरह के फॉर्म में इंग्लैंड की टीम है, कुदरत का निजाम एक बार फिर काम कर जाए, कह नहीं सकते। अगर पाकिस्तान की टीम सेमीफाइनल में पहुंचती है तो उनका सामना भारत से कोलकाता में होगा। फैंस तो फिलहाल यही चाहते होंगे। पाकिस्तान का इंग्लैंड से मुकाबला 11 नवंबर को कोलकाता के ईडन गार्डेन्स में है।

3. अफगानिस्तान

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबले से पहले अफगानिस्तान ने पांच में से चार मैच जीते थे और लग रहा था कि यह टीम चमत्कार कर सकती है। बाकी दोनों की अपेक्षा अफगानिस्तान की टीम का नेट रन रेट सबसे कम है। ऐसे में सिर्फ दक्षिण अफ्रीका पर जीत से वह सेमीफाइनल में नहीं पहुंच पाएंगे। अगर न्यूजीलैंड और पाकिस्तान अपने-अपने मैच हार जाते हैं या इनका मैच बारिश से धुल जाता है और अफगानिस्तान की टीम जीत जाती है तो टीम आसानी से क्वालिफाई कर जाएगी। कीवी और पाकिस्तान के जीतने पर अफगानिस्तान को दक्षिण अफ्रीका को भारी अंतर से हराना होगा ताकि उनका नेट रन रेट बाकी दो टीमों से बेहतर हो सके। तभी यह टीम अंतिम चार में पहुंचने में कामयाब हो पाएगी, जो कि बहुत मुश्किल नजर आ रहा है। अफगानिस्तान और दक्षिण अफ्रीका का मैच 10 नवंबर को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में है।

4. नीदरलैंड

नीदरलैंड की टीम अभी तक आधिकारिक तौर पर टूर्नामेंट से बाहर नहीं हुई है। अगर यह टीम इंग्लैंड और फिर भारत को बड़े अंतर से हराने में कामयाब होती है तो इसके आठ अंक हो जाएंगे। ऐसे में उसे मनाना होगा कि न्यूजीलैंड, पाकिस्तान और अफगानिस्तान तीनों अपने-अपने मुकाबले बड़े अंतर से हारें। जिससे उनका नेट रन रेट बाकियों से बेहतर हो। इसी स्थिति में टीम सेमीफाइनल में पहुंच सकती। अन्य कोई चांसेस नहीं हैं। नीदरलैंड का इंग्लैंड से मुकाबला आज जारी है, जबकि भारत से उसे 12 नवंबर को बंगलूरू के चिन्नास्वामी में भिड़ना है।

न्यूजीलैंड-पाकिस्तान का नेट रन रेट भी बराबर रहा तो क्या होगा?

राउंड रॉबिन स्टेज में बारिश या किसी और कारण से मुकाबला रद्द होता है तो दोनों टीमों को एक-एक अंक मिलेगा। लीग स्टेज में अगर न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के अंकों के साथ-साथ नेट रन रेट भी बराबर रहता है तो फिर इस स्टेज के दौरान दोनों के बीच हुए मुकाबले को जीतने वाली टीम सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई करेगी। पाकिस्तान ने न्यूजीलैंड को हराया था, तो अंक के साथ-साथ नेट रन रेट बराबर रहने पर पाकिस्तान की टीम सेमीफाइनल के लिए क्वालिफाई करेगी।

इस जानलेवा बीमारी के शिकार हो रहे हैं भारतीय

विश्व स्वास्थ्य संगठन के जारी किए गए एक आंकड़े के मुताबिक, वर्ष 2022 में ट्यूबरक्लोसिस जिसे सामान्य भाषा में टीबी कहते हैं, के दुनियाभर में 75 लाख (7.5 मिलियन) मामले दर्ज किए गए हैं। वैश्विक स्तर पर तेजी से फैल रही इस बीमारी के कारण दुनिया में दूसरे नंबर पर सबसे अधिक मौतें हो रही हैं। वहीं डब्ल्यूएचओ के आंकड़े के मुताबिक, टीबी के सबसे अधिक मामले भारत में सामने आए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2022 में भारत में 28.2 लाख टीबी के मामले सामने आए थे। हालांकि 2015 से 2022 के बीच टीबी के मामलों में कुछ गिरावट दर्ज की गई थी।

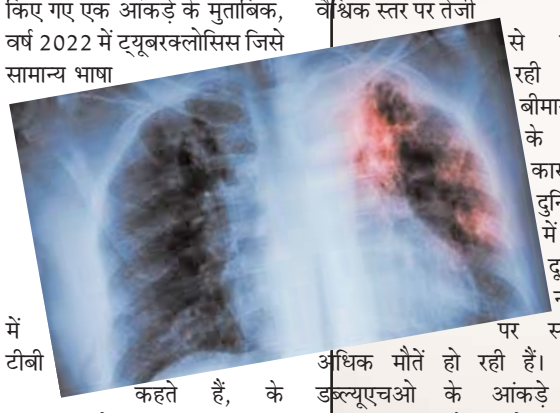

सबसे अधिक टीबी के मामले भारत में

भारत के अलावा कई देशों में टीबी तेजी से फैल रही बीमारी बन चुकी हैं। इसमें इंडोनेशिया में 10 फीसदी, चीन में 7 फीसदी, पाकिस्तान में 5.7 प्रतिशत, नाइजीरिया में 4.5 फीसदी और बांग्लादेश में 3.6 प्रतिशत मामले दर्ज किए गए थे। केवल भारत, इंडोनेशिया और फिलीपिंस में सबसे अधिक टीबी के रोगी हैं। भारत, इंडोनेशिया और फिलीपींस के रोगियों को मिलाकर दुनियाभर का 60 फीसदी आंकड़ा होता है, जो कि 2020 और 2021 में नए रिपोर्ट किए गए।

3 लाख से अधिक लोगों की मौत का कारण टीबी

रिपोर्ट के मुताबिक, 2022 में टीबी के कारण लगभग 3 लाख 42 हजार लोगों की मौत हुई थी। इसमें से 3 लाख 31 लोग एचआईवी नेगेटिव थे और 11 हजार लोगों को एचआईवी संक्रमण था। मरने वाले रोगियों में से बहुत लोगों को टीबी का सही इलाज नहीं मिला और कुछ को समय पर इलाज नहीं मिल पाया। यह रिपोर्ट टीबी निदान और उपचार सेवाओं के पैमाने में एक महत्वपूर्ण विश्वव्यापी सुधार को रेखांकित करती है। कोविड-19 के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए एक उत्साहजनक प्रवृत्ति को दर्शाती है। डब्ल्यूएचओ के डायरेक्टर जनरल टेड्रोस अदनोम कहते हैं हमारे पूर्वज टीबी से पीड़ित थे और इस बीमारी के कारण और बचाव के बारे में बिना जानकारी मर गए। हालांकि आ हम इस रोग के बारे में सबकुछ जानते हैं। हमारे पास वह अवसर है जो हमसे पहले की पीढ़ी के पास नहीं था।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्पलक्े स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एव ं पहला तल, निधि काम्पलेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।